फिर से बहने लगी रूपारेल

प्रो. मोहन श्रोत्रिय
अविनाश

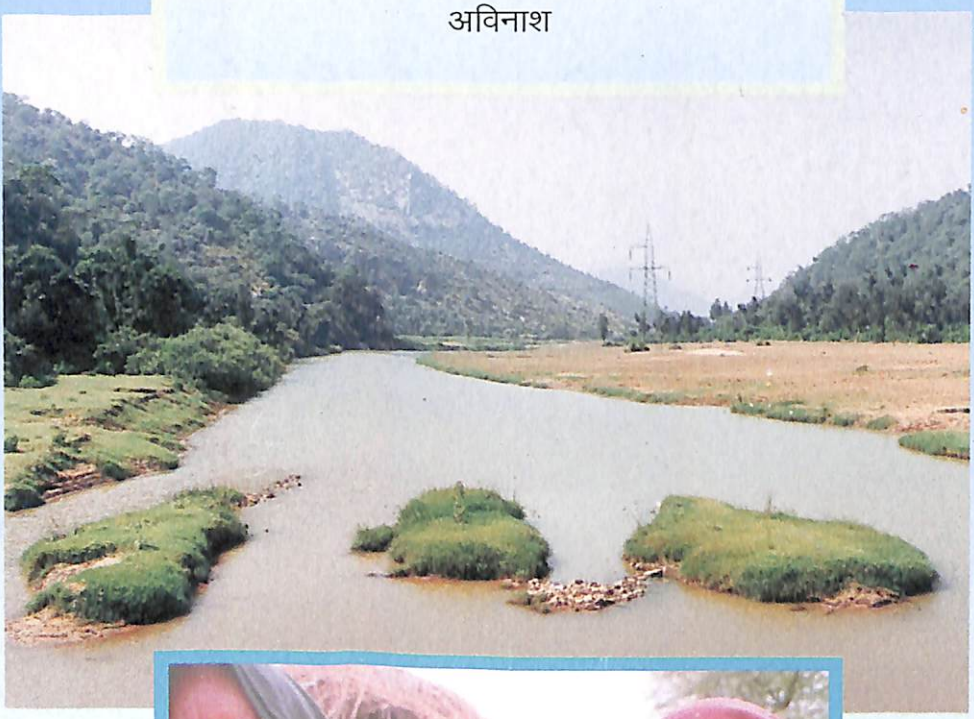

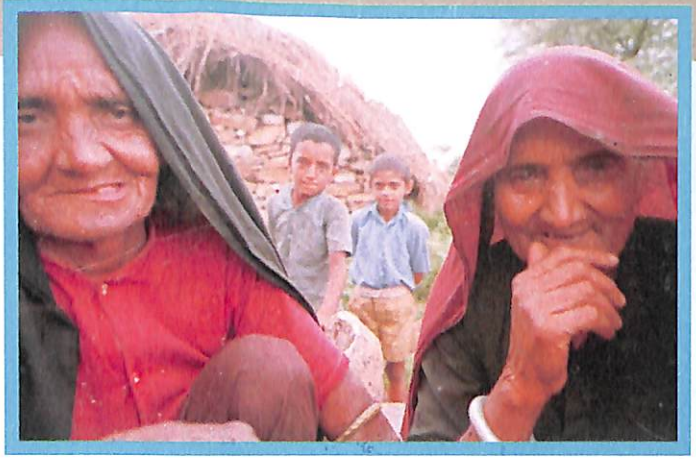

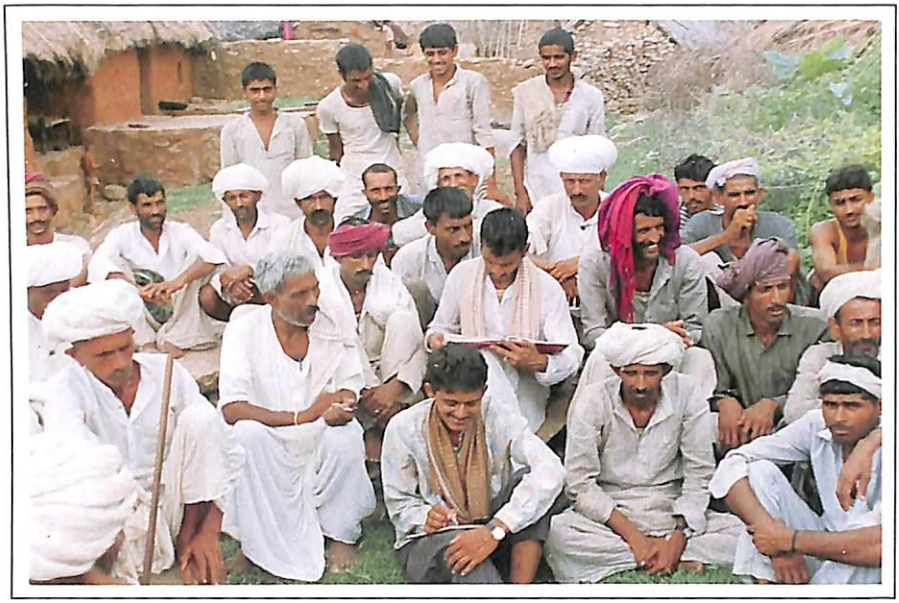

दुहारमाला की ग्राम सभा वन एवं जल संरक्षण के संबंध में चर्चा करती हुई

घाटीवाला जोहड़ के पास प्रसन्न मुद्रा में वे महिलाएं जिन्होंने जोहड़ का निर्माण किया था

दुहारमाला की ग्राम सभा वन एवं जल संरक्षण के संबंध में चर्चा करती हुई

घाटीवाला जोहड़ के पास प्रसन्न मुद्रा में वे महिलाएं जिन्होंने जोहड़ का निर्माण किया था

प्रस्तावना

रूपारेल नदी। अविरल गति से बहती हुई। इसकी जलधाराएं देखकर इतना सुकून होता है मन को, कि उसे शब्दों में बयान कर पाना कठिन है। पन्द्रह सालों से देख रहा था रूपारेल के सूखे हुए पथरीले रास्तों को। पूरी देह के पोर-पोर में कांटों की तरह चुभते रहे थे रूपारेल की जलधाराओं के ये सूखे हुए रास्ते। इसमें पानी को अबाध गति से बहते हुए देखना एक सपने की तरह था (यह बेहद प्रसन्नता की बात है कि युवा आंखों ने जो सपना देखा था वह साकार हो चुका है)। हम उन दिनों रूपारेल के जलागम क्षेत्र में पानी का काम कर रहे थे, इसीलिए मन को ज्यादा तकलीफ होती थी। 1985 में इसी के जलागम क्षेत्र के एक गांव इंदोक की एक ढाणी चिड़ावतों के गुवाड़े में पेमाराम मीणा के घर के पास एक झोंपड़ी में हम कुछ कार्यकर्त्ता रहते थे। इस ढाणी को हमने अपना एक केन्द्र बनाया था। यहां पर रामसहाय, पेमाराम, रामप्रताप तथा इनके परिवार के सदस्यों का असीम प्यार मिला। यह प्रेम अब आपसी विश्वास और श्रद्धा में बदल गया है।

चिड़ावतों के गुवाड़े में लोगों ने रहने के लिए हमें एक सूखा कुआं और एक झोंपड़ी दी थी। कुएं में जहां तक नजर पहुंचती, वहां तक पानी की एक बूंद भी नहीं दिखती थी। दस फुट और अधिक गहरा करने के बाद भी केवल हम पांच कार्यकर्त्ताओं के लिए ही पीने के पानी की व्यवस्था हो पायी। तिस पर भी वह कुआं गरमी के दिनों में सूख जाया करता था। उन दिनों में तो हमें पेमाराम के खेतवाले कुएं से ही पीने के लिए पानी लाना पड़ता था।

मेरे बहुत प्रयास के बाद 1988 में राडीमान्याला गांव के लोगों ने कन्हैया गुर्जर की अगुवाई में तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं के श्रमदान से माला में एक जोहड़ बनवाया था। फिर रामप्रताप मीणा ने, जो डाकिया था, अपने वेतन से कुछ पैसे तथा अपनी ढाणी से थोड़ा-थोड़ा चंदा इकट्ठा कर एक छोटी-सी जोहड़ी तरुण भारत संघ की मदद से बनवायी थी। उन्हीं दिनों गणपत गुर्जर की पहल से क्रास्का की ढाणी में एक जोहड़ बना था। बस ये ही कुछ प्रारंभिक प्रयास थे, जिन्हें देखकर चारों तरफ से जोहड़ बनाने के लिए लोग आने लगे।

उन्हीं दिनों हमारे साथी गोपाल, जगदीश, श्रवण आदि मिलकर दुहारमाला के जंगलों में बसे गांवों में लोगों का सुख-दुख जानने के लिए घूम रहे थे। वहां सब गांव गर्मियों में खाली हो जाते थे। श्रवण ने रहकामाला, तोलावास माला, घाटीवाला में गांव वालों का साथ लिया। इन गांवों में अच्छे कार्यकर्ता निर्माण का काम भी शुरू हुआ। हीरालाल, रामकुमार, ग्यारसी और फूला आदि पुरुष-महिलाएँ कार्यकर्ता के रूप में आगे

आये। इन्होंने जल, जंगल और जमीन बचाने के लिए स्वयं श्रमदान किया। दूसरे लोगों को काम करने के लिए प्रेरित किया और तैयार भी किया। और फिर एक के बाद एक काम होने लगे। कार्यकर्ताओं की मेहनत, लगन और ईमानदारी के साथ जनता ने जुड़कर रूपारेल के जलागम क्षेत्र में आज तक चार सौ से भी अधिक जोहड़ एवं बांध बना लिये हैं। मेंड़बंदियां तो इतनी हुईं जिनका पूरा हिसाब रख पाना ही बेहद कठिन काम है। जंगल संरक्षण के लिए अनगिनत गंवई प्रयास हुए। ग्रामीणों के अनुभव, शक्ति और मेहनत के कारण ही आज रूपारेल का कायाकल्प हो सका है। इस नदी को लेकर लोगों की संघर्ष-गाथा को एक कथा में पिरोने के लिए **प्रो. मोहन श्रोत्रिय** और युवा कवि **अविनाश** गांव-गांव घूमे। इस नदी के सजल होने की कथा जुटायी। उसका संक्षिप्त दस्तावेजीकरण किया। हम दोनों ही लेखकों के विशेष रूप से आभारी हैं। सरिस्का पैलेस ने हमें एक ऐतिहासिक फोटो उपलब्ध कराया। हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

सीडा नाम की संस्था ने रूपारेल नदी के जलागम क्षेत्र में जोहड़-बांध बनाने हेतु हमें सबसे अधिक आर्थिक मदद की है। तरुण भारत संघ तथा रूपारेल नदी के जलागम क्षेत्र की जनता **सीडा** का धन्यवाद ज्ञापन करती है। आरंभिक दौर में **इक्को** ने हमें आर्थिक मदद की थी। वह दौर अकाल का सबसे कठिन दौर था। हम सब **इक्को** के प्रति भी कृतज्ञ हैं।

इस नदी के तीन गांव दुहारमाला, रहकामाला तथा नांगल हेड़ी के कामों में **इंटरकार्पोरेशन**, जयपुर ने हमें आर्थिक मदद की है। हम इनके प्रति भी सम्मान का भाव प्रकट करते हैं। रूपारेल के जलागम क्षेत्र की बढ़ती हरियाली, फलते-फूलते लोग, बढ़ते जंगलों और वर्ष भर सजल रहती नदी की जलधाराओं को देखकर हमारी ऊर्जा और हमारा उत्साह बढ़ रहा है। हम प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करके धन्य हो रहे हैं।

आजकल रूपारेल को और अधिक सजाने, संवारने में गोपालसिंह व जगदीश गूजर की अगुवाई में कार्य चल रहा है। इनके साथ सुलेमान खान, उमा, दड़की माई, ब्रजराज, चंदरी बैरवा, हीरालाल गूजर, जवाहर, शम्सुद्दीन, फत्तू खान, बदामी, गेंदी, शोभाराम, लक्ष्मण यादव, जगदीश पंडित, गजराजसिंह, फतहसिंह, दीपचंद पंडित, रामदयाल गूजर, श्रवण शर्मा, रामखिलाड़ी, धोली, रामस्वरूप, राजेन्द्रसिंह, मिश्रीलाल आदि अनेक समर्पित कार्यकर्ता जुटे हुए हैं। मैं इन सब कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ।

राजेन्द्र सिंह

फिर से बहने लगी रूपारेल

रूपारेल नदी के ऊपरी क्षेत्र की पहाड़ियां 16 वर्ष पूर्व नंगी हो चुकी थीं। पानी के सभी साधन सूख गये थे। लोग घर छोड़कर रोजी-रोटी के लिए बाहर जा रहे थे। घर उजाड़ हो रहे थे। आज घरों पर रौनक लौट आई है। यह रौनक पहाड़ियों पर हरियाली तथा जोहड़ों में पानी होने से आई है। इस क्षेत्र के मीणा-गुर्जर-बलाई सभी ने मिलकर अपने क्षेत्र को सुखी समृद्ध बनाने का काम किया है। उत्तरी-पूर्वी अरावली की घाटियों

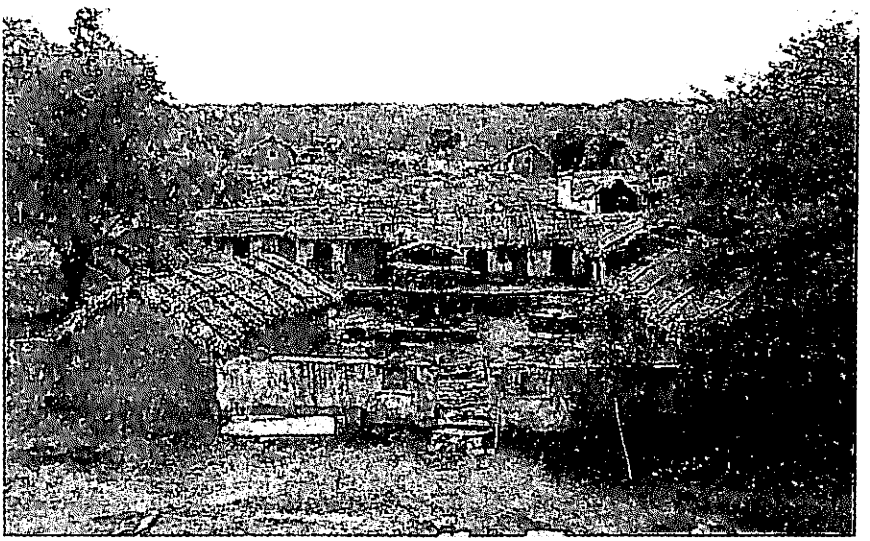

रूपारेल के ऊपरी जलागम क्षेत्र में सरिस्का की पहाड़ियों में बसा घाटीवाला गाँव का दृश्य

में बसे ये लोग स्वाभिमानी एवम् स्वावलम्बी बने रहने हेतु अपने भुलाये हुए तरीकों को पुनः अपनाकर अपनी समृद्धि के रास्ते तैयार कर रहे हैं। इनके प्रयास से अब रूपारेल नदी वर्ष भर बहने लगी है।

रूपारेल की धाराएं

कहते हैं कि जो राष्ट्र भौतिक रूप से संपन्न हैं, नदियां उन राष्ट्रों की मां हैं। नदियां सचेष्ट, गतिमान, मुक्तिदात्री एवं रसवती सरस्वती हैं। आकाश में उमड़ने-घुमड़ने वाले मेघ जब पानी बनकर धरती पर आते हैं, तो पृथ्वी उसकी एक-एक बूंद को अपनी कोख में धारण करती है। ये बूंदें ही पृथ्वी में प्रजनन की गति तथा शक्ति भरती हैं। पृथ्वी के शरीर में शिराओं का काम नदियां ही करती हैं, जिससे सजला धरती पर जड़-जंगम की सृष्टि निरंतर उभरती और मिटती रहती है। और जब ये नदियां रूठकर कहीं चली जाती हैं, तो साथ ही चली जाती है उस जगह की चेतना और स्थावर। सरिस्का क्षेत्र और उसके आसपास की नदियों में रूपारेल नदी की दास्तान कुछ ऐसी ही है।

इस नदी और इसके आसपास के जीवन पर चर्चा करने से पहले आइए, इस नदी के भूगोल पर थोड़ी चर्चा कर लें। रूपारेल नदी की मुख्यधारा दुहारमाला के जंगलों से शुरू होती है और दक्षिण से उत्तर की तरफ बहती है। दुहारमाला के जंगलों से शुरू होने वाली धारा कालाखोरा, बाढ़ गुजरान, तोलावास से होती हुई ताल वृक्ष के पास से गुजरती है। फिर बैरावास, नांगलहेड़ी होती हुई कुशालगढ़ के पास पहुंचती है। यहाँ इसमें रायपुरा भाल से शुरू होनेवाली धारा, जो कि टोडी होती हुई जोधावास पहुंचती है, मिलती है। मैजोड़ से शुरू होनेवाली धारा भी कुशालगढ़ के पास आकर इसमें मिल जाती है। यहां से अमरा का बास, सरिस्का होती हुई इंदोक के पास रूपारेल की धारा पहुंचती है। यहां पर भर्तृहरि की पहाड़ियों से शुरू होने वाली धारा आकर मिल जाती है। इंदोक के पास से गुजरती हुई ये दोनों धाराएं साबर के निकट कुशालगढ़ से पहले मुख्यधारा में मिल जाती है। फिर यहां से माधोगढ़ होती हुई रूपारेल की धारा नटनी का बारा की तरफ आगे बढ़ती है। माधोगढ़ की पूर्व दिशा में अलवर-जयपुर रोड के पास रईका से आनेवाली धारा भी

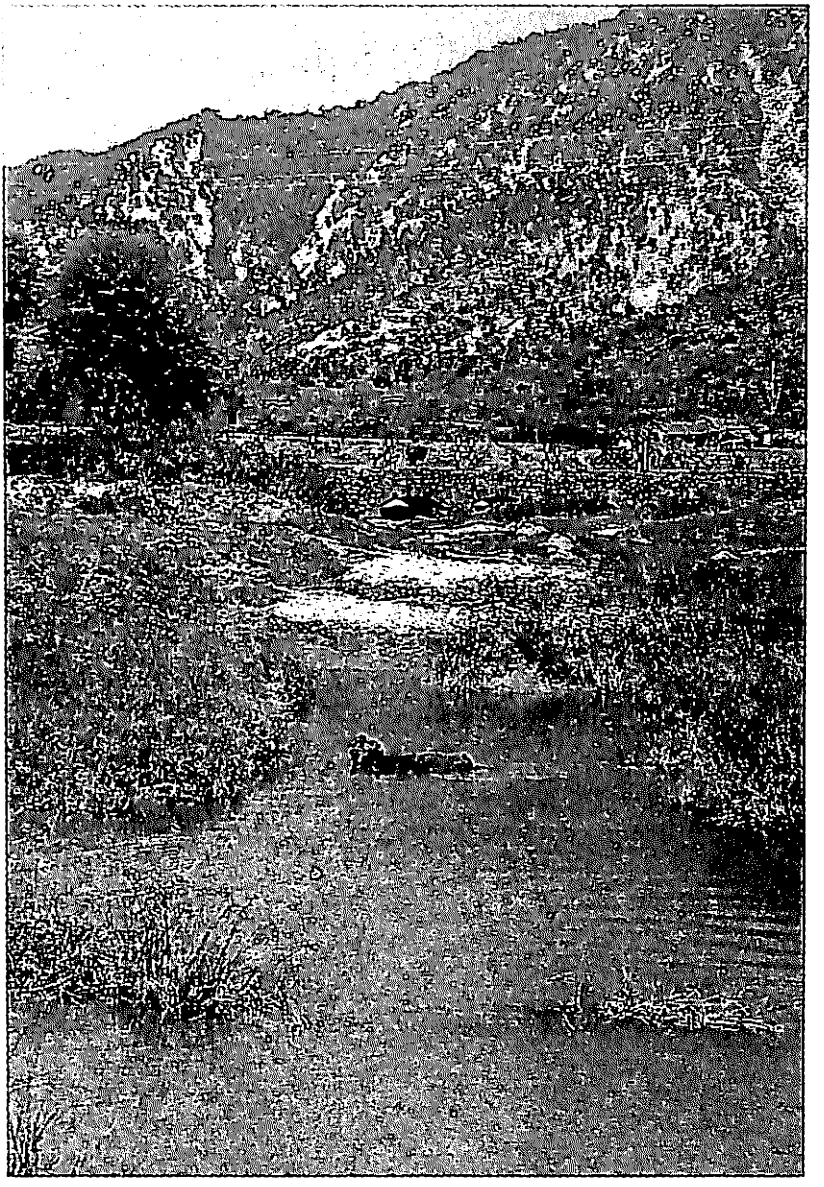

माधोगढ़ के पास तीसरी जलधारा के मुख्य धारा में मिलने का एक दृश्य

रूपारेल में आकर मिल जाती है । फिर यहां से पूर्व दिशा में बहती हुई नटनी का बारा में पहुंचती है । नटनी का बारा से रूपारेल की धारा दो भागों में बंटती है । एक धारा उत्तर की दिशा में जैसमंद झील को भरती

है । दूसरी धारा सीराबास, सारंगपुर, मोहब्बतपुर, कैरवाड़ा, खूटेटाकलां और उसके बाद जुगरावर के पास से होती हुई नसवारी और चमारकलां होकर सीकरीपट्टी बांध में पहुंचती है ।

इस नदी में छोटी-छोटी और भी कई धाराएं मिलती हैं । क्रास्का से शुरू होने वाली धारा कुंड होती हुई माधोगढ़ के पास पहुंचकर इसमें विलीन हो जाती है । रोटक्याला से शुरू होने वाली धारा सूकोला होती हुई माधोगढ़ गांव के सामने इसमें आकर मिलती है । क्रास्का की दक्षिण दिशा की पहाड़ियों से शुरू होने वाली धारा ऐतिहासिक पांडुपोल से निकलकर उमरी के पास से होती हुई सिल्लीबेरी के जंगलों से गुजरती है । इस जंगल से पानी समेटती हुई रूपारेल नदी कीर्तिपुरा के पास से होकर बरखेड़ा, चौमू कैरवाड़ी, पालमपुरा होकर गूजरवास के पास मुख्यधारा में मिलती है । अधीरा की पहाड़ियों से शुरू होने वाली धारा रोगड़ा, ढेहलावास, बख्तपुरा होती हुई सिलीसेढ़ झील को भरती है । इसको भरने के बाद फिर जैसमंद को भरती हुई यह धारा रूपारेल की मुख्यधारा में जा मिलती है ।

इस प्रकार रूपारेल नदी का कुल जलागम क्षेत्र तीन हजार दो सौ पचास वर्ग किलोमीटर है । लंबाई 90 किलोमीटर है । लगभग दो सौ पचास गांवों का पानी लेती हुई तथा उन्हें पानी देती हुई रूपारेल नदी सीकरीपट्टी बांध में पहुंचकर अपना अस्तित्व विलीन कर देती है । 662 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में सघन पहाड़ियां हैं । इन पहाड़ियों में लगभग 12 हजार प्रजातियों की वनस्पति तथा जीव-जंतुओं की लगभग पांच हजार प्रजातियां विद्यमान थीं ।

नदी-घाटी के लोग

रूपारेल नदी के जलागम में पड़ने वाले गांवों में मुख्यतया दो तरह की जातियां बसती हैं – गुर्जर और मीणा । गुर्जरों के गांव अधिकांश पहाड़ी हिस्सों में हैं । इनके जीवनयापन का साधन हालांकि पशुपालन है, लेकिन कुछ गुर्जर परिवार खेती के काम में भी लगे हुए हैं । मीणाओं का समाज आज पूरी तरह खेती-बाड़ी पर टिका हुआ है । यूं सबके पास कुछ न कुछ ढोर-डंगर आज भी हैं, हालांकि पहले इनके भी जीवनयापन का एकमात्र साधन

दुहारमाला गाँव की महिलाएं

पशुपालन ही था। प्रकृति और पर्यावरण को लेकर ये दोनों जातियां पारंपरिक रूप से सजग होती हैं। पर काल का चक्र ही कुछ ऐसा रहा कि थोड़े दिनों के लिए इन जातियों की भंगिमाएं भी बदल गयी थीं। आजादी के बाद प्रकृति को लेकर ये जातियां उदासीन हो गयी थीं। इसका कारण भी था। राजे-

नांगल हेडी गाँव के लोग

रजवाड़ों और अंग्रेजों के समय में जंगल को लेकर कानून तो था, पर प्रबंध को लेकर गांवों को बहुत सारी रियायतें मिली हुई थीं। आजादी के बाद गांववालों से इस तरह का सारा हक छीन लिया गया। उनके गांव की सामलाती जमीन, सामलाती नहीं रही। सरकार ने जंगल वन विभाग के हवाले कर दिये तथा पेड़ काटने के ठेके निजी हाथों में देना प्रारंभ कर दिया। गांव वालों के लिए जंगल पराया हो गया, तो उसको लेकर उनकी चिंताएं भी खत्म हो गयीं। जाहिर है कि ऐसी स्थिति में जंगल नहीं बच सकते थे। जंगल कटे और इस पूरे इलाके की विनाशलीला शुरू हो गयी।

आज स्थितियां बदल गयी हैं। लोग संपन्न हो रहे हैं। सबके पास थोड़ी-बहुत जमीनें हैं। औसतन हर परिवार के पास 1.5 एकड़ खेत है। दस से 15 के बीच में गाय-भैंसें सबके पास हैं। आज गुर्जर और मीणा जातियां प्रत्यक्ष रूप से घास, सूखी लकड़ियों और शहद के लिए जंगल पर निर्भर हैं। रूपारेल के जलागम में खेती और पशुपालन से जुड़ी हुई कुछ और जातियां हैं, जिनमें मेव, जाट और राजपूत मुख्य हैं। इन जातियों में कायदे और दस्तूर तो अलग-अलग हैं, लेकिन जंगल के प्रति सबकी एक समान आत्मीयता है।

रूपरेल नदी जल विवाद का समाधान करते समय जनवरी 1928 को अलवर के राजा जयसिंह, स्वामी हंसस्वरूप जी तथा भरतपुर के महाराज किशनसिंह जी, युवराज ब्रजेन्दसिंह व राजा मानसिंह खड़े हैं।

राजस्थान के इस भाग में कुछ तो प्रथाओं और परंपराओं के कारण जंगल बचते हैं, तो कुछ इनके शांत और प्रकृति-प्रेमी स्वभाव के कारण।

रूपारेल की धारा को लेकर विवाद

अंग्रेजों के जमाने में रूपारेल नदी के बंटवारे को लेकर अलवर और भरतपुर राज में लंबे अरसे तक लड़ाई चली। रूपारेल नदी का प्राकृतिक रास्ता भरतपुर राज को जल देते हुए यमुना तक जाता था। अलवर के तत्कालीन राजा इस पानी को अलवर में ही रोके रखना चाहते थे। भरतपुर के राजा इस बात पर राजी नहीं थे। उनका कहना था कि जब यह भगवान का दिया पानी है, तो किसी खास व्यक्ति या समाज का अधिकार इस पर कैसे हो सकता है ? और यह हमारे राज में भी तो आता है। हमारे राज की जनता व जमीन की भूख-प्यास मिटाता है, तो हमें इसका पानी क्यों नहीं मिलना चाहिए। इस पानी की कमी से हमारी सारी भूमि खारी हो जाएगी और हमारे राज की जनता भूखी मर जाएगी।

अलवर के राजा भरतपुर के राजा की इस बात को मानने के लिए कतई तैयार नहीं थे। उनका कहना था कि यह पानी हमारी पहाड़ियों पर बरसता है। भगवान ने यह पानी हमें दिया है। जिसकी जमीन पर भगवान पानी देता है, उसी को उसके उपयोग का अधिकार है। रूपारेल नदी का पानी प्रकृतिप्रदत्त हमारा है। इसका उपयोग हम जैसे चाहें, कर सकते हैं। इस बात पर दोनों राजा आपस में अड़ गये। लंबे अरसे तक लड़ाई चली। अंततः मामला उन दिनों लंदन में लगने वाली अदालत में गया और 4 वर्षों तक चला।

अलवर के महाराज प्रकृति-प्रेमी थे और वे प्रकृति की शक्ति और गुणों को अच्छी तरह से जानते-पहचानते थे। वे यह भी जानते थे कि हमारी पहाड़ियां ऐसी कुबेर हैं कि ये देती ही हैं, लेती नहीं। इनका रक्षण-पोषण, अत्यंत आवश्यक है और इसके पीछे भावना यह थी कि हमारी पहाड़ियों पर बरसने वाला पानी यहीं पर रुक जाये। इसीलिए नटनी का बारा से ऊपर का जितना भी पहाड़ी क्षेत्र था, वह पूरा क्षेत्र इस जल विवाद के दिनों में संरक्षित घोषित किया गया। पहले तो बांदी पुल, कालीघाटी, सिलीबेरी, भर्तृहरि की

'रूंध' घोषित हुए। उसके बाद इन सबको मिलाकर सरिस्का शिकारगाह घोषित किया गया, जिससे इस क्षेत्र में बरसने वाला जल पहाड़ियों को पोषित कर सके तथा इससे नीचे के कुओं में खेती के लिए जल का स्तर बना रहे और भरतपुर राज्य में कम से कम पानी पहुंचे।

उन्हीं दिनों भरतपुर महाराज ने अदालत से यह आदेश करा लिया था कि रूपारेल पर अलवर महाराज कोई बांध नहीं बनाएं। यह विवाद लंबा खिंचता रहा।

इसका निपटारा जनवरी 1928 में ही हो पाया। निपटारे के समय दोनों राजाओं ने इसको उत्सव की तरह मनाया और उस मौके पर भरतपुर के महाराज श्री किशनसिंह, राजा मानसिंह और राजकुमार ब्रजेन्द्रसिंह तथा अलवर की तरफ से महाराज श्री जयसिंह, स्वामी हंसस्वरूप, दुर्जनसिंह, जावली, माधोसिंह तसींग, कर्नल केसरीसिंह कानोता, गणेशलाल धावाई, माधोसिंह भाटी अनावड़ा तथा श्रीमती यूग्लिन मार्टिन मौजूद थीं। इनके साथ दोनों राज्यों की जनता भी उस उत्सव में शामिल हुई थी। इस निपटारे में नटनी का बारा में एक समतल जगह बनाकर हिस्सेवार लंबाई देकर नदी का बंटवारा हुआ। अलवर राज को चार खाने तथा भरतपुर

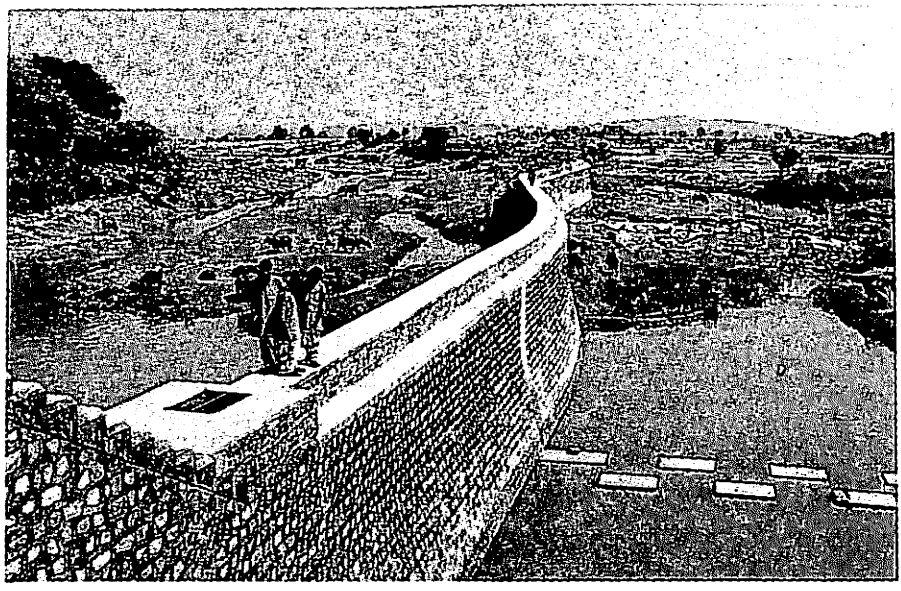

रूपारेल नदी के जल को बाँटने वाली ऐतिहासिक दीवार

राज को पांच खाने पानी मिला। इस पानी को अलग-अलग राज में पहुंचाने के लिए बीच में एक ऊंची-लंबी दीवार बनाकर पानी की धारा को बांटा गया ।

नदी का संक्षिप्त इतिहास

80 के दशक में इस नदी पर एक बड़ा बांध मैलोडैम बनाने की बात भी थी । पर इस बांध को लेकर पर्यावरण विभाग की हरी झंडी नहीं मिल पाने के कारण बात आगे नहीं बढ़ पायी । उस वक्त रूपारेल नदी में अक्टूबर-नवंबर के महीने तक ही पानी ठहरता था । प्राय: दिसंबर से

माला तोलावास की ग्यारसी व फूला, जिन्होंने रूपारेल के जलागम क्षेत्र में तलाब निर्माण का काम शुरू किया था। इसके ऊपरी हिस्से में अपने परिश्रम से पहले जोहड़ का निर्माण किया।

जुलाई तक यह नदी सूखी रहती थी । इसके जलागम क्षेत्र में कई छोटे-मोटे झरने थे, जो बहा करते थे । पर सभी 10-15 साल पहले तक सूख गये । नदी के सूखने की भी अपनी कहानी है । करीब तीस-चालीस साल पहले नदी में पानी था और आसपास की आबादी सरसब्ज थी । उस समय मुख्य तौर पर पशुपालन किया करते थे लोग । आजादी के बाद

लोगों ने खेती करना शुरू कर दिया । जंगल काट-काट कर लोग खेती के लिए जमीन तैयार करने लगे । रुचियां पशुपालन से खेती की ओर मुड़ने लगीं । मैजोड़ से जो रूपारेल नदी की धारा आती थी, उसके पूरे जलागम क्षेत्र में जंगलों का भारी कटाव किया गया । बाद में दुहारमाला और रईकामाला के जंगलों को भी काट दिया गया । नदी का ऊपरी चट्टानी पहाड़ी भाग, जो सबसे ऊपर पड़ता है, वहां भी खेती शुरू कर दी गयी । जब तक मिट्टी नम रही, तब तक तो अच्छी-खासी खेती हुई । फिर पानी का रुकना बंद हो गया । जंगलों के व्यापक पैमाने पर कटाव के कारण ऐसा हुआ । पत्थरों के उत्खनन हेतु बहुतेरे उद्योग खोले गये । इन उद्योगों का भी प्रतिकूल प्रभाव नदी की जलधाराओं पर पड़ा। जंगल

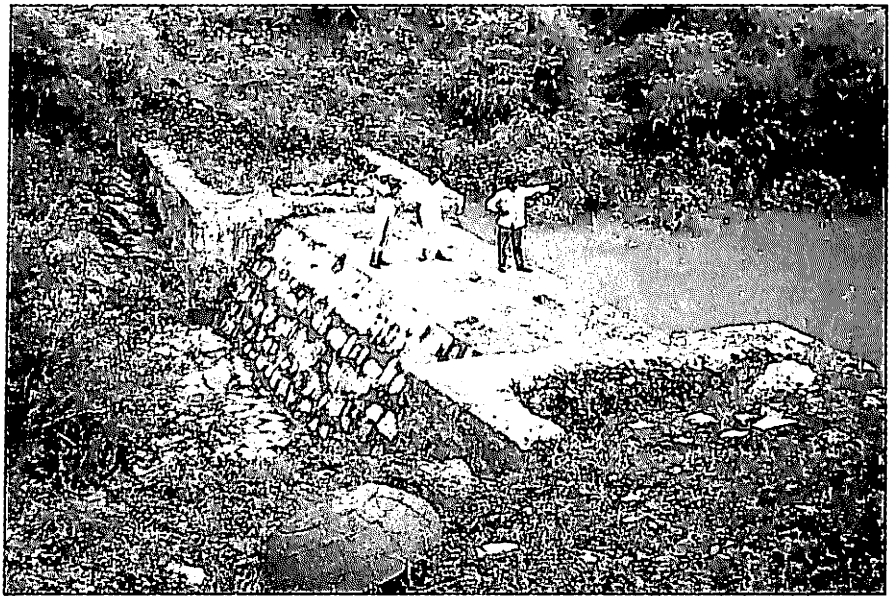

श्रवण शर्मा, हीरालाल गुर्जर रहकामाला ऐनीकट को ग्रामसभा अध्यक्ष के साथ देखते हुए

को नुकसान पहुंचाने वाली और भी कई तरह की गतिविधियां बढ़ गयीं। परिणामत: जो झरने बहते थे, वे भी सूखने लग गये और धीरे-धीरे हुआ यह कि नदी की मुख्यधारा ही सूखने लग गयी ।

जब नदियां सूखीं, तो किसान गांव छोड़कर बाहर जाने लगे । मैजोड़ की तरफ के अधिकांश किसान तो अहमदाबाद, सूरत की ओर

चले गये । दुहारमाला की तरफ के लोग अपने पशुओं को लेकर नीचे के इलाके में चले गये, जबकि यही दुहारमाला अपने गोचर, जंगल के लिए कभी पूरे इलाके में मशहूर था । यहां दूसरे गांवों के लोग अपने पशुओं को लेकर चराने आते थे । उसी दुहारमाला के लोग अपने पशुओं को लेकर रूपारेल के भरतपुरवाले भाग की ओर जाने लगे । यह दुहारमाला के लोगों के लिए एक बहुत बड़ी त्रासदी थी, जिसे वे पूरी तकलीफ़ के साथ झेल रहे थे ।

1947 में भारत के आजाद होने के बाद सरकार की ओर से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को लेकर महज दिखावटी कोशिशें हुईं । 1956 तक राजस्थान के मशहूर सरिस्का वन क्षेत्र को शिकारगाह के रूप में सुरक्षित कर रखा था । 1885 में अलवर के स्थानीय शासक महाराजा मंगलसिंह ने सरिस्का को शिकारगाह घोषित किया था । 1907 में सरिस्का पैलेस की स्थापना हुई थी । 1935 में अलवर महकमा जंगलात ने इसके प्रबन्ध हेतु नौ 'रूंध' क्षेत्रों में विभक्त किया था । 1956 में इसे पक्षी अभयारण्य घोषित किया गया । 1978 में इसे बाघ परियोजना घोषित किया गया तथा 1982 में सरिस्का को राष्ट्रीय उद्यान के रूप में घोषित करने की राज्य सरकार ने अपनी प्रथम अधिघोषणा कर दी थी । उसी समय से क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग पर पाबंदी लगा दी गयी। रूपारेल नदी के जलागम क्षेत्र में कई गांव सरिस्का के संरक्षित हिस्से में आते हैं । इन गांवों पर कई तरह के प्रतिबन्ध लगा दिये गये । उनसे उनकी खेती की जमीन के अधिकार भी छीन लिये गये ।

सूखी धारा, सूखे लोग

आजादी के बाद की जंगलविरोधी गतिविधियों से रूपारेल नदी के दो ऊपरी गांव दुहारमाला और रईकामाला भी अछूते नहीं रहे थे । इस गांव के अधिकांश लोग पशुपालन का अपना पारंपरिक धंधा छोड़ खेती की ओर उन्मुख हो गये । खेती के लिए जंगल तो काटे ही गये थे, जमीन के अंदर का पानी भी बड़े पैमाने पर उपयोग में लिया जाने लगा । जंगल कटे, तो पानी रुकने के बजाय बहकर जाना शुरू हो गया । फिर तो चार-पांच साल के अंदर-अंदर बरसाती पानी के तेज बहाव से ऊपरी मिट्टी का

भारी कटाव हुआ। यह लोगों का अतिरिक्त नुकसान था, जिसे लोगों ने अनजाने में खुद ही मोल ले लिया था ।

1970 तक आते-आते रूपारेल नदी, जो पूरी तरह से एक बारहमासी नदी थी, मौसमी नदी होकर रह गयी । और धीरे-धीरे सूखती ही चली गयी । 1980 तक रूपारेल नदी, नदी नहीं रह गयी । सूखकर पगडंडीनुमा हो गयी । 80 के दशक के शुरू में ही भयानक अकाल आया। इस अकाल ने लोगों पर दोतरफा हमला किया । एक तो जंगल पहले ही कट गये थे । नदी सूख गयी थी । और फिर यह अकाल आ गया । स्थिति इतनी कष्टप्रद हो गयी कि लोगों का गांव में रहना मुश्किल हो गया । रूपारेल नदी के जलागम की आधी से अधिक आबादी भागकर उन जगहों पर चली गयी, जो जगह अपेक्षाकृत नीचे पड़ती थी । जहां पानी की बूंदें अब भी बची रह गयी थीं । फिर पानी की इस कदर कमी हुई कि 1987 में इस पूरे इलाके को सरकार ने **अंधेरा क्षेत्र (डार्क ज़ोन)** घोषित कर दिया। डार्क ज़ोन भू-भाग के उस हिस्से को कहते हैं, जहां पानी का घोर अभाव हो । जमीन के अंदर का पानी भी खत्म हो गया हो । इन्हीं कारणों से इस इलाके में सरकार ने कुआं खोदने की मनाही कर दी थी । यह विडंबना ही है कि जिस इलाके में रूपारेल जैसी नदी बहती रही हो, वहां लोग बूंद-बूंद के लिए तरसने लग गये थे ।

पहला जोहड़, पहला पानी

80 से 86 का साल भयंकर अकाल का साल था । हाल ऐसा था कि पानी की कीमत पर लोग बिकने के लिए तैयार थे। उन्हीं दिनों तरुण भारत संघ पानी के पुनर्सिंचन को लेकर आशा की गठरियां लिये अलवर के गांव-गांव घूम रहा था । रूपारेल नदी को लेकर संघ की आशा पर विश्वास की मोहर तब लगी, जब मालातोलावास की दो महिलाओं ने पानी के लिए कुछ भी कर दिखाने की हिम्मत संघ के सामने रख दी ।

गूजरबहुल मालातोलावास रूपारेल नदी के ऊपरी हिस्से पर बसा हुआ गांव है यानी पहाड़ के ऊपर । रूपारेल के जलागम क्षेत्र में सबसे पहला तालाब यहीं बना और वह भी मात्र दो महिलाओं के दम पर । गांव

का पुरुष वर्ग पूरा का पूरा शहरों की ओर पलायन कर चुका था। गांव में बची थीं मात्र दो महिलाएं – ग्यारसी और फूला। इन्हीं दो बची हुई महिलाओं के गांव मालातोलावास में तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता श्रवण शर्मा अपना झोला लटकाये हुए घूमते-टहलते पहुंचे। उन महिलाओं से बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। पहली ही प्रतिक्रिया में उनका पानी का दर्द सामने था कि **भगवान का कोप है। भगवान नाराज है, इसीलिए पानी के बिना दर-दर भटक रहे हैं।** और जब श्रवण शर्मा ने पानी के इंतजाम की बात चलायी, तो सहसा उन महिलाओं को विश्वास नहीं हुआ। उन्हें लगा कि गाहे-बगाहे आ जाने वाले नेताओं की तरह यह भी 'हवाबाजी' कर रहा है। जरूर कोई भोट-तोट (वोट) का चक्कर है लेकिन यहाँ तो आज तक कोई वोट लेने वाला नेता भी नहीं पहुँचा था। इन गाँववासियों को ही वोट देने नीचे जाना पड़ता था। उन्हें इत्मीनान तब हुआ, जब बात का पूरी तरह खुलासा कर दिया गया। श्रवण शर्मा ने कहा कि इसमें मैं क्या धोखा कर सकता हूँ ? पानी होगा, तो खुशियां भी मालातोलावास में ही लौटेंगी। महिलाओं को थोड़ा भरोसा हुआ और दोनों ने मिलकर जोहड़ बनाने का काम शुरू किया। बीच-बीच में श्रवण शर्मा भी आते रहते और उन दोनों महिलाओं के साथ जोहड़ बनाने के काम में जुट जाते। इससे महिलाओं को भरोसा और बढ़ा। और एक दिन जोहड़ बनकर तैयार हो गया। इस जोहड़ बनाने में श्रवण शर्मा ने भी श्रमदान किया था।

इस जोहड़ में पहले साल कुल तीन महीने ही पानी रहा। यह भी कम नहीं था। जहां एक दिन के लिए भी पानी नहीं ठहरता था, वहां तीन महीने तक पानी का ठहरे रहना खुशियों की पहली किस्त थी। दूसरे साल छह-सात महीने जोहड़ में पानी रहा और तीसरे साल से साल भर पानी रहने लगा। यह इन महिलाओं के लिए चित्तौड़गढ़ का किला फतह कर लेने की तरह था। पर यह किला फतह हो जाएगा, पहले यह भरोसा था ग्यारसी और फूला को ? 'भरोसा कांई, धर्म को मारैं काम कियो। म्हाणे पानी चाहिए छ।'पहले विश्वास नहीं था, लेकिन जब श्रवण ने साथ काम किया, तो भरोसा जगा। बाहर चले गये लोग भी वापस लौटने लगे। आज इस गांव की लगभग सारी आबादी लौट आयी है। लेकिन इस एक

दुहारमाला की ग्रामसभा जल, जंगल संरक्षण की बातचीत करते हुए।

जोहड़ के पानी को साफ कैसे रखते हैं लोग ? इन महिलाओं का जबाव है कि जहां से पानी आता है, वहां गंदगी होने ही नहीं देते । उस जगह पर निबटने की सख्त मनाही है । जब मालातोलावास में जोहड़ बना, पानी

जोहड़ का निर्माण करते कार्यकर्त्ता ग्रामवासी

आया, तो दूसरे गांव के लोग आकर अपनी बसावट यहां करने लगे लेकिन उनको यहां बसने नहीं दिया गया ।

रूपारेल नदी और तरुण भारत संघ

तरुण भारत संघ ने रूपारेल नदी के उद्गम-स्थानों पर 1985-86 में कई पदयात्राएं, सभाएं एवं गोष्ठियां आयोजित कीं । 1987 में इस क्षेत्र के लोगों को साथ मिलाकर संगठित करने का काम किया । सबसे पहले जंगलात विभाग की ज्यादतियों के खिलाफ आवाज बुलंद करने का काम हुआ । लगातार दो वर्षों तक अपनी सक्रिय गतिविधियों से तरुण भारत संघ ने लोगों का विश्वास आखिर जीत ही लिया । आपस के इसी भरोसे के बीच तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं एवं गांववालों ने डटकर सरकार का मुकाबला किया । इसी प्रक्रिया में खत्म हुए प्राकृतिक संसाधनों को पुनः पैदा करने की ताकत गांववालों ने जुटायी । स्वयं ही उसके प्रबंध का निश्चय लिया । सबसे पहले चिड़ावतों का गुवाड़ा गांव में पेमाराम मीणा ने अपने गुवाड़े के पास जोहड़ बनाया था । इसी के साथ छोटी इंदोक के रामप्रताप मीणा ने दूसरा जोहड़ बनाया था । फिर मालातोलावास

खरखड़ा गांव में जोहड़ का काम पूरा होने पर तरुण भारत संघ के कार्यकर्त्ता जगदीश गुर्जर के साथ ब्रजराज सरपंच तथा नई स्वैच्छिक संस्था के प्रतिनिधि अमन काम को समझते हुए।

में जोहड़ बनाने की बारी आयी । 1987 में केवल ये चार जोहड़ रूपारेल नदी के जलागम हिस्से में बने थे । उस समय इन जोहड़ों का जंगलात विभाग ने बहुत विरोध किया था । पानी खरीदने में सक्षम और साधन-संपन्न लोगों ने इन जोहड़ों का मजाक उड़ाया था । विरोध किया उन सरकारी लोगों ने भी, जो जंगल की आड़ में खुद 'हरा' होना चाहते थे। जंगल की जमीन पर जोहड़ बनाने के काम में सैकड़ों अवरोध पैदा किये

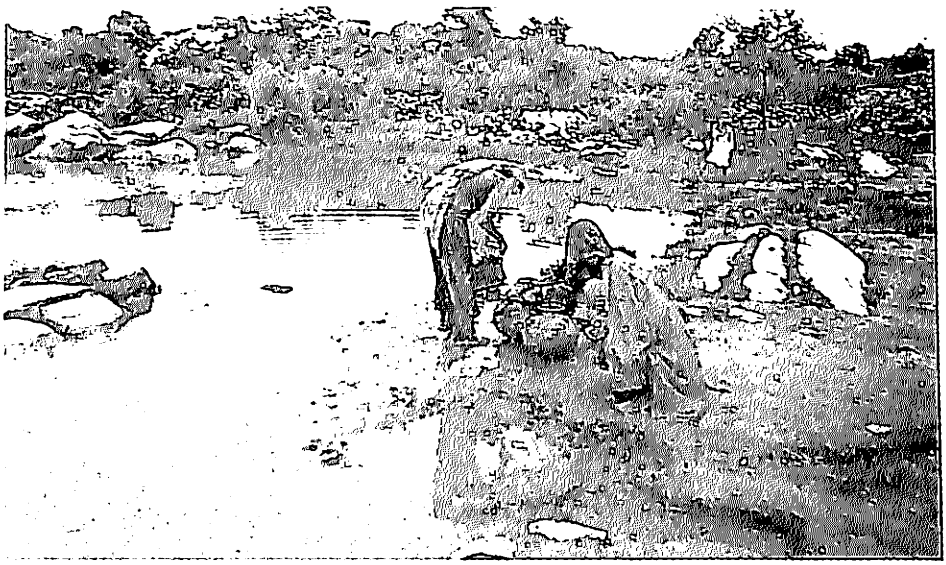

दुहार माला गांव की महिलाएं अब आसानी से जल प्राप्त कर लेती है।

गये । उन लोगों ने जोहड़ों को न बनने देने की तिकड़में कीं । धौंसपट्टी की हरकतें की, लेकिन लोगों की जरूरत व संगठन के कारण जोहड़ बनते चले गये ।

फिर दो वर्ष लोगों को संगठित और अनुशासित करने एवं जंगलात विभाग से बातचीत करके उन्हें जोहड़ के फायदे समझाने में लगे। 1989 से फिर काम शुरू हुआ । 1991-92 तक तरुण भारत संघ ने जंगलों के संरक्षण एवं वृक्षारोपण पर काफी जोर दिया । 1993 में इस नदी जलागम क्षेत्र गांव नांगलहेड़ी, लोज, तोलास, रइकामाला, दुहारमाला, सुकोला, डाबली, रईका आदि में तेजी से काम हुआ । 1994-95 में इस नदी की दूसरी धाराओं पर भी काम शुरू हुआ और

रहकामाला गांव का छोटा बांध

रहकामाला गांव

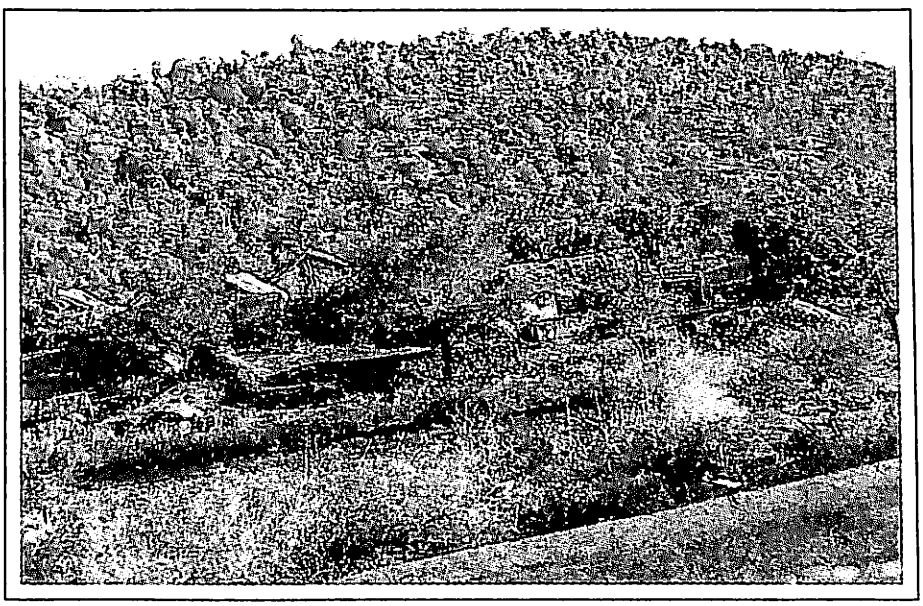

में जोहड़ बनाने की बारी आयी। 1987 में केवल ये चार जोहड़ रूपारेल नदी के जलागम हिस्से में बने थे। उस समय इन जोहड़ों का जंगलात विभाग ने बहुत विरोध किया था। पानी खरीदने में सक्षम और साधन-संपन्न लोगों ने इन जोहड़ों का मजाक उड़ाया था। विरोध किया उन सरकारी लोगों ने भी, जो जंगल की आड़ में खुद 'हरा' होना चाहते थे। जंगल की जमीन पर जोहड़ बनाने के काम में सैकड़ों अवरोध पैदा किये

दुहार माला गांव की महिलाएं अब आसानी से जल प्राप्त कर लेती है।

गये। उन लोगों ने जोहड़ों को न बनने देने की तिकड़में कीं। धौंसपट्टी की हरकतें की, लेकिन लोगों की जरूरत व संगठन के कारण जोहड़ बनते चले गये।

फिर दो वर्ष लोगों को संगठित और अनुशासित करने एवं जंगलात विभाग से बातचीत करके उन्हें जोहड़ के फायदे समझाने में लगे। 1989 से फिर काम शुरू हुआ। 1991-92 तक तरुण भारत संघ ने जंगलों के संरक्षण एवं वृक्षारोपण पर काफी जोर दिया। 1993 में इस नदी जलागम क्षेत्र गांव नांगलहेड़ी, लोज, तोलास, रइकामाला, दुहारमाला, सुकोला, डाबली, रईका आदि में तेजी से काम हुआ। 1994-95 में इस नदी की दूसरी धाराओं पर भी काम शुरू हुआ और

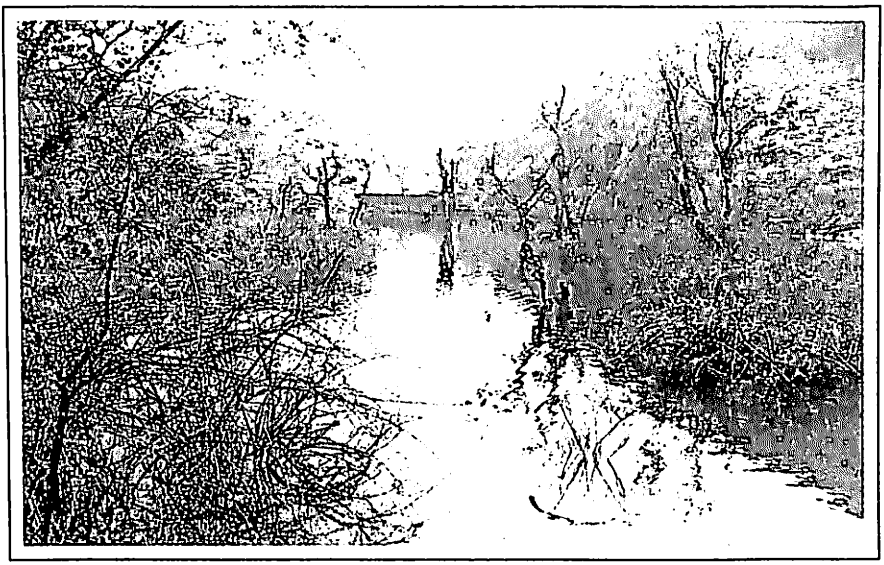

रहकामाला गांव का छोटा बांध

रहकामाला गांव

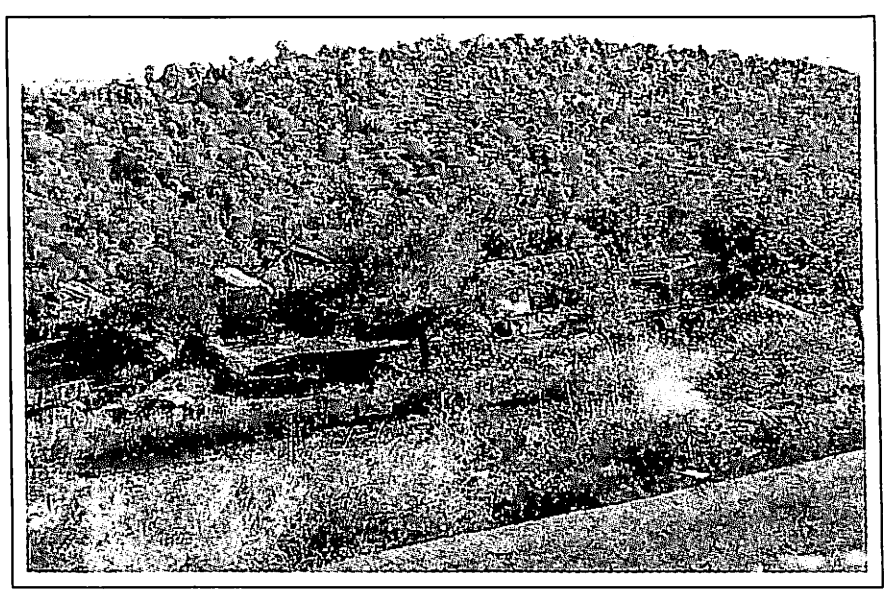

रूपारेल (बाराँ) नदी

जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा किये गये कार्य

(1985 से 30 सितम्बर 1997 तक के कार्य)

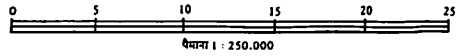

संकेत

-----	जलागम क्षेत्र की सीमा
	नदी व नाले
	बांध
	बस्ती
1,2,354 इत्यादि	जल संरक्षण संरचनाएं

कुल जलागम क्षेत्र 3250 वर्ग कि.मी.

लम्बाई 90 किलोमीटर

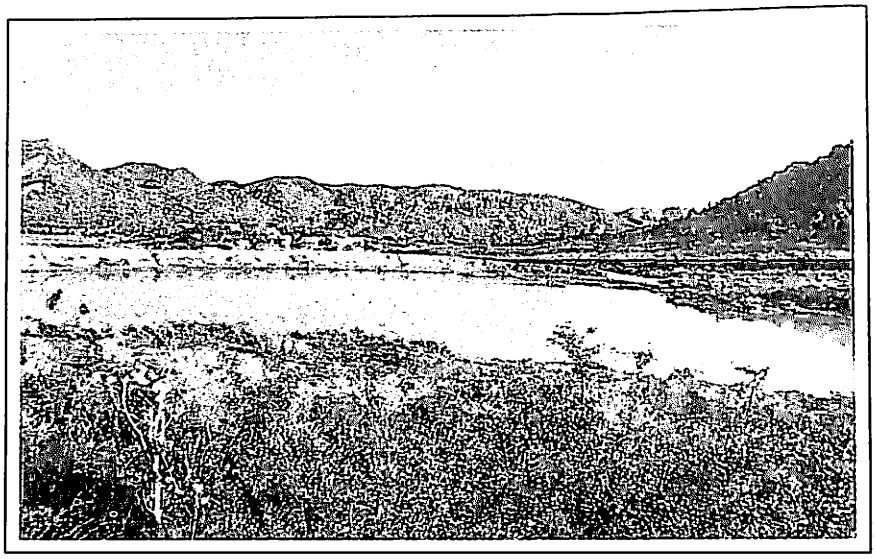

रहकामाला गांव का जोहड़

दुहारमाला गांव का जोहड़

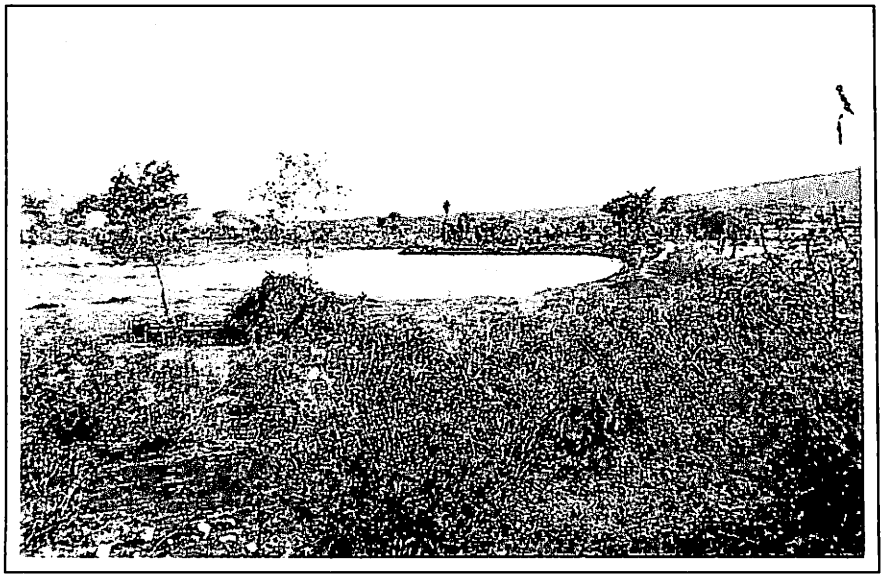

मैजोड़, श्यामपुर, टोडी जोधावास, उदयनाथ आदि स्थानों पर छोटे-छोटे जोहड़ बनाये गये । 1985-86 में ही क्रास्का, लीलूण्डा, कुंड आदि

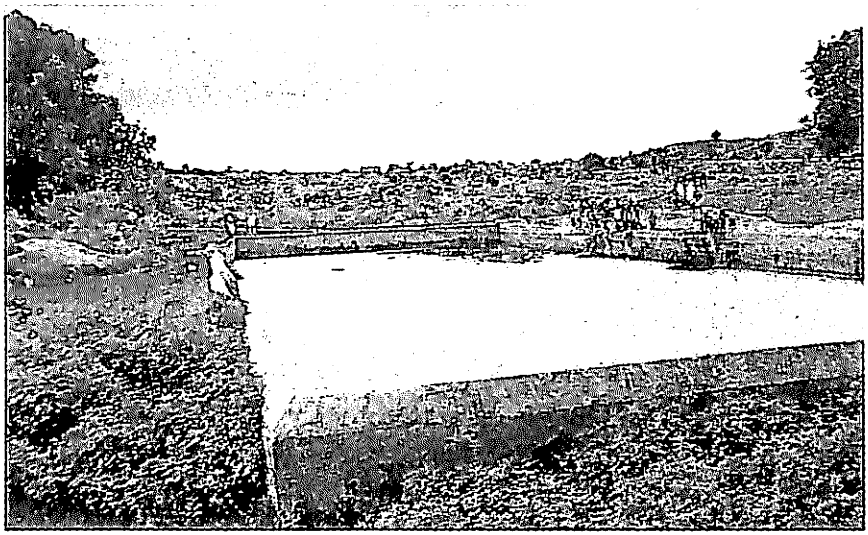

दुहारमाला टांके का पुन: निर्माण होने पर अब लोग वर्ष भर अपने गाँव में रहने लगे हैं।

स्थानों पर काम शुरू हो गया था । उसे पूरा किया गया। रूपारेल की तीसरी धारा, जो अधीरा से शुरू होती है, उस पर भी 1986-87 से ही चेतना निर्मित करने का काम जारी था । फिर 1988-89 में जोहड़ निर्माण का काम भी हुआ । इस धारा पर अधीरा से लेकर ढेहलावास, बखतपुरा, बीजक, हाजीपुर आदि गांवों में जंगल बचाने के साथ-साथ जोहड़ बनाने का काम भी हुआ। इस प्रकार इस नदी के ऊपरी हिस्सों में 1986 से 1994 तक चेतना-जागरण, जंगल की समस्याओं का समाधान, वन विभाग से संवाद एवं मेलजोल, जंगल संरक्षण एवं जोहड़ निर्माण आदि काम हुए ।

1995 में इसी नदी की धाराओं के नीचे के हिस्सों में **सीडा** नाम की स्वीडिश संस्था की मदद से काम शुरू हुआ। कालीखोल, डोबा, सीरावास, अकबरपुर, अलापुर, सोदानपुर, उमरैण, जाटोली, मोहम्मदपुर, बनियावाली, सरका धोकड़ी, टोडली, मदार की ढाणी, सोतका, जुगरावर, पथरोडा, खरखड़ा, कैरवावाल, चौमू आदि सैकड़ों गांवों में जल संरक्षण का काम किया

गया। इस नदी के पूरे जलागम क्षेत्र में अभी तक तीन सौ चौवन (354) तालाब बना लिये गये हैं। इस नदी के ऊपरी हिस्सों पर जो काम हुआ, उसमें **इको** और **इंटर कोऑपरेशन** जैसी संस्थाओं की मदद भी तरुण भारत संघ के साथ रही।

लौट आयी खुशियां

रूपारेल नदी के जलागम क्षेत्र में दूसरा जोहड़ था घाटीवाला। घाटीवाला गांव में। चनेजा के जोहड़ को बनाना शुरू किया, गांव के ही तीन आदमियों ने। जयराम गूजर, प्रसादो और डूंगा। फिर धीरे-धीरे सब लोग जुड़

जोहड़ निर्माण से लोगों की संगठन-क्षमता बढ़ने लगी है। अब ये सतत रूप से जल-जंगल बचाने में लगे हुए हैं।

संरक्षण के काम से महिलाओं का सशक्तीकरण

गये। यह गांव भी उसी हालत में था, जैसी हालत मालातोलावास में थी। नदियां बहीं, तो लोगों का मन हरा हुआ। कहते हैं कि हमारा देश जब सोने की चिड़िया हुआ करता था, तब घी का दीया भी जला करता था। आज घाटीवाला गांव में भी घी का दीया जलने लगा है। और वह भी कहावत में नहीं, सचमुच का। नदियां अपने किनारे के गांवों को भौतिक या आर्थिक रूप से ही समृद्ध नहीं करती हैं, सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध करती हैं। इस गांव के पूरन गूजर, जयराम गूजर, रामकरन गूजर एवं रामप्रताप गूजर अब जंगल को अपना देवता मानते हैं। न खुद काटते हैं, न किसी को काटने देते हैं। इस गांव के लोगों का अपने मवेशियों के साथ इतना हार्दिक रिश्ता है कि इन लोगों ने अपने सब मवेशियों के नाम अलग-अलग कर रखे हैं। किसी खास मवेशी से काम होता है, तो ये उसका नाम लेकर पुकारते हैं।

घाटीवाला गांव के लोगों द्वारा मवेशियों का रखा गया नाम किस तरह का होता है। आइए कुछ उदाहरणों के सहारे इसको जानें। जैसे इस गांव में कुछ भैंसों के नाम हैं मोरड़, काजल, लीलड़, बटेरी, पीलर, बांडी, धोली, लसनी, पीरो आदि। गायों के नाम इस प्रकार हैं : लैहरडो, टोसन, उज्जल, डागली, पीडी आदि। बकरियां- हंसो, लाडा, कंचरी, नकरो आदि नामों से

वर्ष भर बहने वाले जल से अब पशुओं को जगह-जगह पीने के लिये जल मिलने लगा है।

पुकारी जाती हैं। इन पशुओं के नाम उनके आकार-प्रकार और स्वरूप के आधार पर निर्धारित किये जाते हैं। पूरी तरह प्रकृति के आंगन में जीने वाले ये लोग सुबह-सुबह मोर जैसे पक्षियों के लिए नियत जगह पर दाना भी छोड़ते

हैं। अनुशासन इतना है कि भरपूर पानी आ जाने के बावजूद ये लोग अपना पुराना बीज ही बोते हैं। ज्यादा पानी पीनेवाली फसल लेते ही नहीं। मसलन खरीफ जैसी फसलें ज्यादा काम में लाते हैं। अभी पश्चिम का मानवतावाद इस गाँव में नहीं पहुँचा है। पर ये तो पशु-पक्षी, जीव-जगत्, पेड़-पौधे सबको ही मानव की तरह मानते हैं।

हरा हुआ गांव, हरे हुए लोग

रूपारेल नदी अलवर तहसील के एक गांव पथरोड़ा से भी गुजरती है। पथरोड़ा के मोहम्मद सुलेमान बताते हैं : हमने पानी के अभाव में अपने मवेशियों को दरवाजे से खोल दिया था। क्योंकि लगभग सभी मवेशी सूख कर कंकाल हो गये थे और उनके मरने का पाप हम अपने माथे पर नहीं ले सकते थे। बाहर के लोग हमारे लड़कों का निकाह तक नहीं करते थे। सुलेमान बताते हैं कि मैं भी कोर्ट-कचहरी जैसी जगहों 'इधर-उधर' करके ही अपना और अपने परिवार का पेट चलाता था। पानी के बिना हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी थी। आज पानी है, तो नेकनीयती और ईमानदारी से काम करने लगा हूं। ज्ञातव्य है कि सुलेमान तरुण भारत संघ के साथ मिलकर अपने गांव में पानी के संरक्षण के लिए अकेले उठ खड़ा हुआ था। फिर लोगों को मिलाकर कई सारे जोहड़ और बांध बना डाले थे। सुलेमान आज दूसरे गांवों में भी पानी के प्रबंध में लगा हुआ है। इस तरह की प्रेरणा सुलेमान को अपने गांव से ही मिली कि पानी होने पर कैसे एक गांव लगभग बदल जाता है। पहले पथरोड़ा में काफी मुश्किलें झेलने के बाद सरसों, चने जैसी फसलें हो जाया करती थीं। आज सहज रूप से लोग गेहूं, जौ, आलू, प्याज तथा अरहर, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि फसलें पैदा करने लगे हैं। पशुओं का दूध भी बढ़ गया है। जंगल बचाने के लिए पथरोड़ा में वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम भी चले।

चौमू के सरपंच ब्रजराज जी का कहना है कि मैं तो तरुण भारत संघ के साथ हालांकि पिछले सात-आठ वर्षों से काम कर रहा हूँ, लेकिन पिछले तीन-चार साल से संघ की **सीडा** परियोजना में पूरी तरह सक्रिय हूँ। ब्रजराज जी ने अपने इलाके में संघ की मदद से करीब साठ-सत्तर जोहड़ बनवाये। ये कहते हैं कि पहले एक बीघा की सिंचाई के लिए 15-20 लीटर डीजल का खर्च होता था। अब पांच लीटर में ही सिंचाई हो जाती है। पहले एक घंटे

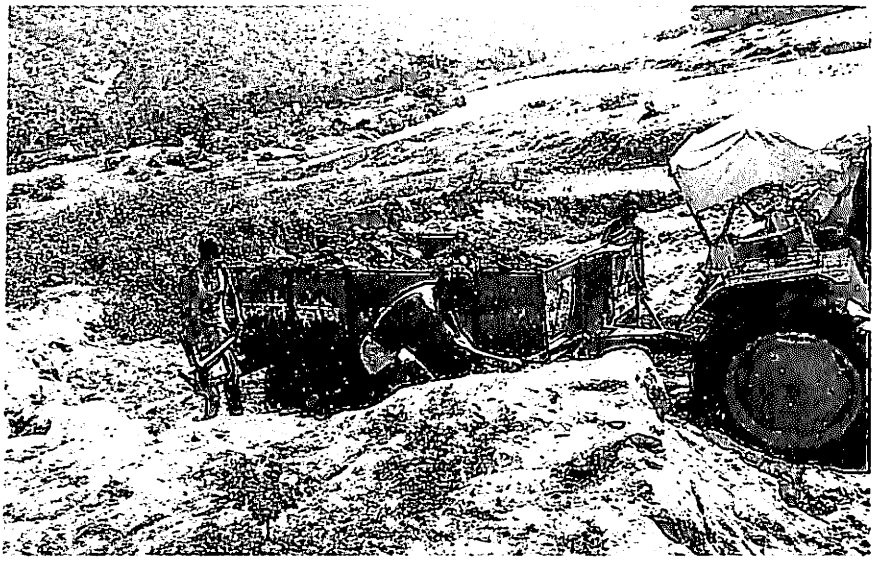

माधोगढ़ निवासी रंगलाल रूपारेल नदी के किनारे मिट्टी भरते हुए। इन्होंने नदी सूखने पर कुआं गहरा कर लिया था तब भी सिंचाई के लिए पानी पर्याप्त नहीं था।

में ही कुएं का पानी खत्म हो जाता था, अब तो रात भर में भी खत्म नहीं होता। ब्रजराज जी ने अपने गांव चौमू में काफी मुश्किलों को झेलते हुए काम किया है। गांव की गोचर में कुछ लोग जोहड़ बनाने का विरोध कर रहे थे। कई वर्षों तक यह काम इसी विरोध के कारण अटका रहा। ब्रजराज उन सबको समझाने में लगातार लगे रहे और अंततः वहां जोहड़ बना ही लिया। आज फसल और फसलों की विविधता के मामले में चौमू काफी उन्नत गांव है।

कथा दुहारमाला

रूपारेल नदी की जो मुख्यधारा मालातोलावास से कुशालगढ़ तक जाती है, तो वह एक गांव दुहारमाला से गुजरती है। यह दुहारमाला एक सौ इक्कीस घांगल गूजर परिवारों का गांव है, जो छह ढाणियों यानी छह टोलों में बंटा हुआ है। जब रूपारेल नदी सूख गयी थी, इनके लिए दुहारमाला महज चार महीने का बसेरा होता था। गर्मियों में ढाक के पेड़ सूख जाते थे। धोंख के पत्ते चारे की पूर्ति करने में असमर्थ थे। चराई की घास दीपावली तक समाप्त हो जाती थी। ऊपर से इन चार महीनों में जो भी बचत होती थी, जंगलात

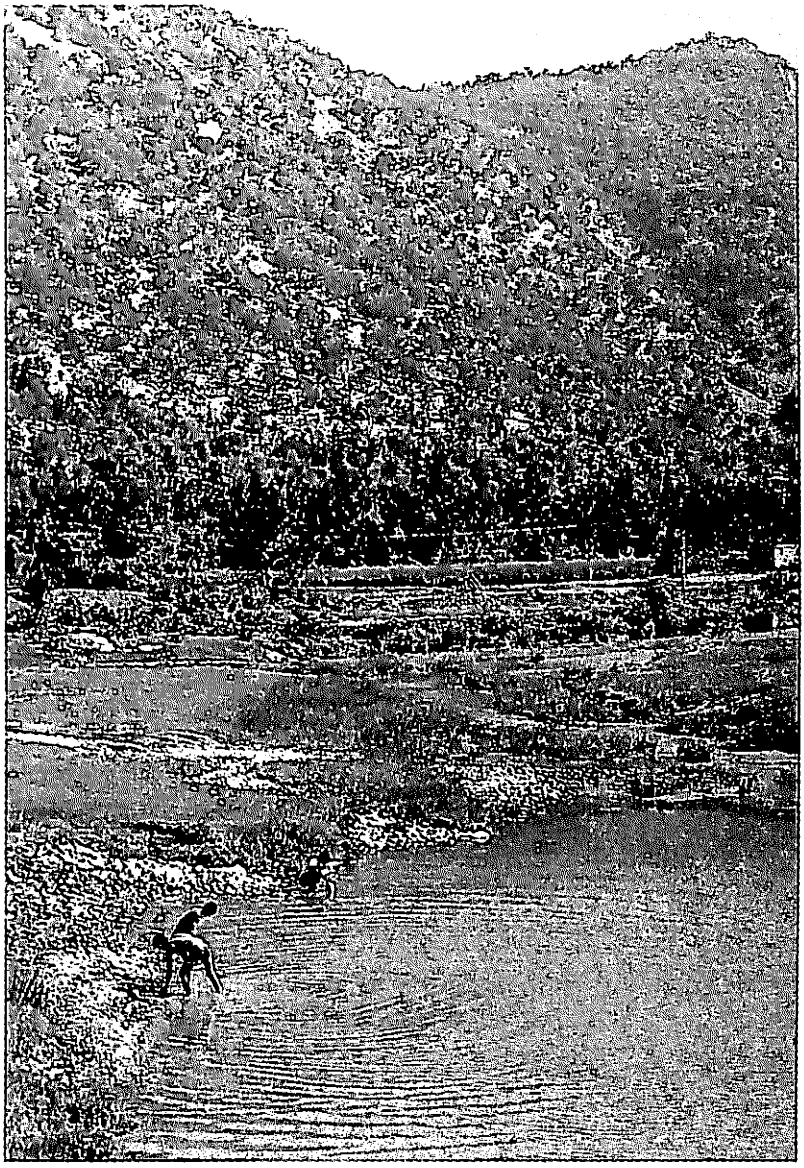

रूपारेल बहने लगी तो यह स्थल-पर्यटकों व तीर्थयात्रियों के आकर्षण का केन्द्र बन गया

विभाग वाले डरा-धमका कर ले जाते थे। गांव के आधे से ज्यादा लड़के कुंवारे रह जाते थे। कोई अपनी लड़की दुहारमाला में ब्याहना नहीं चाहता था। बीमार लोग और बीमार होते चले जाने पर मजबूर थे, क्योंकि यहां दूर-

दूर तक इलाज की कोई गुंजाइश नहीं थी। सो अंधविश्वास यहां हर वक्त आसन जमाये रहता था। लोगों को इलाज के रूप में हीरामल, भर्तृहरि, भैरूं जी और तेजाजी की झाड़फूंक व जड़ी-बूटियों का ताबीज ही मिलता था। रोचक बात तो यह है कि गांव के लोगों का भगवान पर तो भरोसा था, सरकार नाम की चीज पर से विश्वास और आस्था सब कुछ उठ गया था। सरकार का कोई कारिन्दा सिर्फ लूटने के लिए ही पहुँचता था इन गाँवों में।

आठ साल पहले पानी के अभाव की भीषण स्थिति झेलते हुए जब लोग ऊब गये, तो कुछ उपाय करने की सोची। गांव के लोग तरुण भारत संघ के संपर्क में आये। और अपने गांव का वर्षा-जल रोकने के लिए टूटे हुए पुराने टांके की मरम्मत का काम हाथ में लिया। जोहड़ खोद कर तैयार कर दिये। गांव में वन विभाग वालों की दखल को बंद कराया। गांव वालों ने 1988 में सरिस्का के क्षेत्र निदेशक को लिखित सूचना दी, ''अब आपको हमारे गांव में जंगल व जंगली जीवों की रक्षा हेतु आने की जरूरत नहीं है। हमने अपने जंगल व जंगली जीवों की सुरक्षा करने हेतु अपने गांव का कानून बना लिया है। हमारे कानून में गांव का जंगल एवं जंगली जीव बचाने के लिए अलग से वन विभाग की जरूरत नहीं है। हम ही अपने गांव के जंगली जीव बचाएंगे। कृपा करके हमारे जंगल में मत आना।''

दुहारमाला के एक बुजुर्ग नानू बाबा कहते हैं, अब एक बार फिर छह सौ साल पहले बसे इस गांव के दिन बदले हैं। मूलचंद गूजर का कहना है कि हमारे पुरखे जब अज़मेर से आकर यहां बसे होंगे, तो उस समय भी यहां आजकल की तरह साल भर खाने-पीने और रहने की सारी जरूरतें पूरी होती होंगी। ज्ञातव्य है कि इस गांव का इतिहास छह सौ तैंतालीस साल पुराना है। इस गांव में छह सौ तैंतालीस साल पुराने मक्का, सरसों एवं ज्वार के कुछ बीज आज भी बचे हुए हैं। मूलचंद आगे कहते हैं, ''अब हम साल भर पहाड़ के ऊपर अपने दुहारमाला गांव में ही बसे रहते हैं। वर्षभर की सभी जरूरतें पूरी करने के साथ-साथ पीने का पानी भी वर्षा से इकट्ठा कर लेते हैं। पहाड़ पर पानी रुकने के कारण आसपास खूब नमी रहने लगी है। इससे खूब घास-फूस और हरियाली रहती है, जिससे पशुओं की पेटभर चराई हो जाती है। दूध तो कई गुणा बढ़ गया है। यहां अब अतिरिक्त जरूरतें पूरी करने योग्य अनाज भी

पैदा होने लगा है। ईंधन और पानी घर के पास ही उपलब्ध होने से महिलाओं का समय बचने लगा है। अब ये इस समय का उपयोग गांव के सामलाती कामों में करती हैं। लड़के-लड़कियों को पढ़ाने का काम भी यहां शुरू हो गया है। गांव में अब कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं होता। हमारा कोई मुकदमा अदालत में नहीं है।'' राजेंद्रसिंह अपनी पुस्तक **लोक परंपरा से मिला रास्ता** में कहते हैं, ''दुहारमालावासियों ने अपना हाथ जगन्नाथ कर दिखाया।''

यह है रूपारेल के कछेर का एक गांव दुहारमाला। विकास की कठिन राह को सहज बनाने में लगा हुआ। रूपारेल पूरी मस्ती के साथ आज बह रही है। उसके हिस्से में पड़ने वाली पृथ्वी अब घूंघट काढ़ने लगी है। नूपुर बजने लगे हैं और शृंगार मुस्कराने लगा है। नाम गुण रूपा। रेल की गति। आज अपने शृंगारिक चरम के साथ रेल की तरह सरसरानेवाली रूपारेल अपने आसपास के गांवों को समृद्ध बनाने में व्यस्त है।

सरिस्का पैलेस के श्री लक्ष्मण सिंह चौहान रूपारेल नदी के पुनरुज्जीवित हो जाने पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहते हैं : ''हमारे यहां की उजड़ी रौनक वापस लौट आयी है। अब यहां देशी-विदेशी पर्यटकों की संख्या एक-साथ बढ़ गई है। हरे-भरे जंगल के बीच नदी को बहता देखकर पर्यटक मुग्ध हो जाते हैं। इसके बहने से जंगल व जंगली जीवों को बेहद लाभ हुआ है।''

सरिस्का बाघ परियोजना में कार्यरत श्री उदयभान कहते हैं: ''रूपारेल के पूरे साल बहते रहने से अब जंगली जीवों को साल भर पानी मिलने लगा है। इससे इनकी सुरक्षा में बड़ा सहयोग मिला है। पहले जंगली जानवरों को किसी एक खास जगह पानी पीने के लिए जाना पड़ता था और शिकारियों को जंगली जानवरों का शिकार करने में कोई जोर नहीं आता था। अब जानवर अपनी इच्छा और सुविधा के अनुसार पानी पीने कहीं भी जा सकते हैं। अब शिकारी घात लगाकर नहीं बैठ सकता। बाघ परियोजना को रूपारेल के सजल हो जाने से बड़ा लाभ हुआ है।''

बराबास के बंजारे (घुमंतू लोग) बताते हैं ''जब यहां पानी नहीं था तो हम यहां बरसात के दिनों में एक-दो महीने ही अपने घर पर रुक पाते थे। गर्मी में सारा गांव खाली हो जाता था - सब शहर चले जाते थे खाने कमाने

का जुगाड़ करने। एकदम नरक की जिंदगी जीते थे वहां। अब तो हम लगभग पूरे साल ही अपने गांव में रहते हैं और यहीं जीने लायक कमा लेते हैं। खेती ठीक-ठाक होने लगी है। अब तो हम खेत की मिट्टी रोकने का काम भी करने लगे हैं। खेतों की सिंचाई नदी के पानी से ही हो जाती है। यहीं से हमारे तथा पशुओं के पीने का पानी भी मिल जाता है आसानी से।''

माधोगढ़ के पूर्व में जहां रूपारेल की दो धाराएं मिलती हैं वहां अब मोटल खुलने लगे हैं, दुकानें खुलने लगी हैं पर्यटकों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए। यहां दिन भर लोगों को नहाने का आनंद लेते देखा जा सकता है।

क्रास्का गांव के दक्षिण में जोहड़-बांध बनने से पांडुपोल के झरने फिर से बहने लगे हैं। इसी तरह गुर्जरों की ढाणी, क्रास्का कुंड तथा लीलूंडा में बने जोहड़ों का असर भतृहरि के झरनों पर पड़ने लगा है। यहां के दृश्य पर्यटकों और भक्तजनों दोनों को ही मुग्ध कर देते हैं। यहां आया प्राकृतिक बदलाव इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि ये दोनों ऐसे श्रद्धास्थल हैं जहां दूर-दूर से लोग आते हैं, पूरे साल आते रहते हैं। साल में एक बार दोनों स्थलों पर बड़े जंगी मेले लगते हैं। पानी द्वारा लाये गये बदलाव की कथा दूर-दूर तक पहुंच जाती है।

लीलूंडा में दड़की माई के नेतृत्व में जोहड़ निर्माण का काम हाथ में लिया गया। दुर्गम पहाड़ियों में बसे इस गांव में जोहड़ निर्माण से पूर्व जीना कितना मुश्किल रहा होगा इसका अंदाज लगाना आसान नहीं है। दड़की माई का कहना है ''रात-दिन खटते रहने पर भी अपने लिए व अपने पशुओं के लिए पीने के पानी का भरपूर इंतजाम हम कर ही नहीं पाते थे। अब तो हमें पानी का काम रहा ही नहीं है। पहले दस घंटे लगते थे तो भी पूरा नहीं पड़ता था। अब दो घंटे का भी काम नहीं रहा है। जोहड़ बनने से पहले हमने जाना ही नहीं था कि आराम किसे कहते हैं। अब आराम के बाद भी खाली समय मिल जाता है। और कोई काम हो, ऐसा मन करता है।''

काली खोल की चंद्री बैरवा (अब सरपंच, बखतपुरा पंचायत) तरुण भारत संघ के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हैं और बताती हैं ''अपने गांव का बरसात का पानी अब हम अपने ही गांव में रोकने लग गए हैं। इससे अब गांव में पूरे साल पानी मिलने लग गया है। हमारा सारा समय जो पहले पानी का जुगाड़

बैठाने में रोते-कलपते बीत जाता था, अब बचने लगा है। आराम मिलने लगा है। अपने गांव की समस्याओं के बारे में सोचने और काम करने के लिए समय मिलने लगा है। बच्चों की पढ़ाई और स्वास्थ्य की चिंता करने का समय मिलने लगा है।'' डॉ. शची आर्य ने इन गांवों का अध्ययन किया है। उसमें ये बातें उभर कर आई हैं।

रूपारेल के पुनरुज्जीवित हो उठने से समूचा परिवेश बदला-बदला लगता है। जैसे उसकी रंगत ही बदल गई है। सिर्फ हरियाली नहीं बढ़ी है। जंगली जानवरों की सुरक्षा पानी की उपलब्धता से कैसे बढ़ सकती है, यह भी पता चलता है। दरअसल, इस अंचल के गांवों के लोगों के जीवन पर भी इसका बेहद सकारात्मक असर पड़ा है। थकानेवाले और हाड़-तोड़ मेहनत के कामों से उन्हें मुक्ति मिली है। इसे जीवन की गुणवत्ता सुधरने की शुरुआत कहा जा सकता है। उनका सोच बदल रहा है। सरोकार बदल रहे हैं। वे सपने देखने लगे हैं। पानी का सपना साकार हो जाने के बाद अब और सपने तैरने लगे हैं उनकी आंखों में, और यह उचित भी है। सपनों से ही तो जीवन के बदलने की शुरुआत होती है। रूपारेल नदी के पुनरुज्जीवित हो जाने से इन सपनों और मानवीय गरिमा पा लेने के संघर्ष व संकल्प की जो नींव धरी गयी है उस पर एक बेहतर तथा और अधिक सुखद भविष्य एवं सामुदायिक जीवन की इमारत खड़ी हो सकती है। सतत प्रवहमान रूपारेल सिर्फ पानी ही उपलब्ध नहीं करायेगी, अंचल के लोगों के सशक्तीकरण का भी उपकरण बनेगी।

जंगल को सघन बनाने के तरीकों पर चर्चा करते ग्रामवासी

रूपारेल (बारां) नदी जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा किये गये कार्य

(1986 से 30 सितम्बर, 1997 तक के कार्य)

क्र.सं.	बांध/जोहड़ का नाम	गांव	क्र.सं.	बांध/जोहड़ का नाम	गांव
1.	पांच देवा जोहड़	अधीरा	26.	नानगावाला जोहड़	,,
2.	तिल्लीवाला जोहड़	,,	27.	आंधावाला जोहड़	,,
3.	रामावतार का जोहड़	,,	28.	मानसिद्ध का जोहड़	डोवा
4.	तलावड़ा का जोहड़	,,	29.	रूपनारायण का जोहड़	,,
5.	बांस का माला का जोहड़	धामला का बास	30.	भगवान सहाय की मेड़बंदी	बीनक
6.	बीरबल का जोहड़ (पहाड़ी पर)	सीरावास	31.	छोटेलाल की मेड़बंदी	,,
7.	सीरावास का जोहड़	,,	32.	गौर लीलका जोहड़	,,
8.	रामतलाई	,,	33.	जन्मपुरी का जोहड़	,,
9.	बांसवाली नली का जोहड़	,,	34.	रामतलाई	बीनक
10.	नलवाला जोहड़	,,	35.	नीमड़ीवाले भोमिया का जोहड़	श्योदानपुरा
11.	हरसागर जोहड़	,,	36.	बगीचीवाली जोहड़ी	उमरैन
12.	मामचंद का एनीकट	धोकड़ी	37.	छोटेलाल का एनीकट	,,
13.	छाजू बैरवा का एनीकट	हाजीपुर	38.	पचवीरवाला जोहड़	,,
14.	हीरालाल का एनीकट	मदारी की ढाणी	39.	बेरावाला जोहड़	कालीखोल
15.	माड़िया की मेड़बंदी	,,	40.	चंद्री सरपंच का एनीकट	,,
16.	राधेश्याम की मेड़बंदी	,,	41.	मौला राम की मेड़बंदी	,,
17.	रतनलाल की मेड़बंदी (प्रथम)	,,	42.	मीणा वाला एनीकट	,,
18.	रतनलाल की मेड़बंदी (द्वितीय)	,,	43.	हीरालाल बैरवा की मेड़बंदी	,,
19.	मुखराम की मेड़बंदी	,,	44.	हरलाल की मेड़बंदी	,,
20.	किसन की रोणवाली मेड़बंदी (प्रथम)	,,	45.	साधुराम की मेड़बंदी	,,
21.	किसन की रोणवाली मेड़बंदी (द्वितीय)	,,	46.	बोदन तंवर की मेड़बंदी	,,
22.	दीपसागर	ढेहलावास	47.	डूंगाराम की मेड़बंदी (प्रथम)	
23.	पंचबीरवाला जोहड़	,,	48.	बंड्या का एनीकट	,,
24.	बगीचीवाली जोहड़ी	,,	49.	बोदन छावड़ी का एनीकट	,,
25.	बद्री का एनीकट	बख्तपुरा	50.	फागणावाली जोहड़ी	,,

क्र.सं.	बांध/जोहड़ का नाम	गांव
51.	डूंगाराम की मेड़वंदी (द्वितीय)	,,
52.	पहाड़ी पीछेवाली ढाव	,,
53.	बूवन का एनीकट	,,
54.	रामलाल के बांधवाली मेड़वंदी	,,
55.	रामलाल के खेत की मेड़बंदी	,,
56.	रामकिसन की मेड़वंदी	,,
57.	चैक डैम	,,
58.	रामकरण गुर्जर की मेड़वंदी	,,
59.	बड़ी लाववाला जोहड़	,,
60.	हर सागर जोहड़	,,
61.	साहब खान का एनीकट	अकबरपुर
62.	कमला खां का बांध	,,
63.	जगन बैरवा की मेड़वंदी	अलापुर
64.	रास्तेवाला जोहड़	जाटोली
65.	मुनीराम की मेड़बंदी : (प्रथम)	घाटीतला
66.	रतीराम गुर्जर की मेड़बंदी	,,
67.	कमला (बेवा) का एनीकट	,,
68.	मुनीराम की मेड़बंदी : (द्वितीय)	,,
69.	जयनारायण की मेड़वंदी	,,
70.	जयकिशन की मेड़बंदी	घाटीतला
71.	हरलाल गुर्जर की मेड़बंदी	,,
72.	गणेश गुर्जर की मेड़बंदी	,,
73.	संपत गुर्जर का एनीकट : (प्रथम)	,,
74.	संपत गुर्जर का एनीकट : (द्वितीय)	,,
75.	मंगतू गुर्जर की मेड़बंदी	,,
76.	सीताराम की मेड़बंदी	,,
77.	श्रवण गुर्जर की मेड़बंदी	सिया का बास
78.	हरलाल गुर्जर की मेड़बंदी	,,
79.	छाजूराम की मेड़बंदी	माधोगढ़
80.	मीणावाला जोहड़	,,
81.	ईकावाला जोहड़	ईका
82.	प्रभुवाला एनीकट	सावर
83.	श्रवण मुक्कड़ की मेड़बंदी	,,

क्र.सं.	बांध/जोहड़ का नाम	गांव
84.	खानवाला बांध (सीताराम का)	नांगलहेड़ी
85.	गौरवाला जोहड़	खो (नांगलहेड़ी)
86.	पापड़ीवाला बांध	भूराला (बैरावास)
87.	सूदवाला जोहड़	रहकामाला
88.	रोनाला जोहड़	,,
89.	थोरयांली जोहड़ी	,,
90.	धोकांवाला जोहड़	,,
91.	पीला खेत का जोहड़	,,
92.	कूंडलीवाला एनीकट	,,
93.	बड़ा जोहड़	,,
94.	लाल ढाव की छोटी जोहड़ी	,,
95.	लाल ढाव की बड़ी जोहड़ी	,,
96.	जोहड़ीवाला जोहड़	,,
97.	जांटवाला जोहड़	,,
98.	लोहड़या जोहड़	,,
99.	बंदड़ीवाला जोहड़	,,
100.	तोलावास का जोहड़	तोलावास
101.	भड़ाना की भाल की जोहड़ी	भड़ाना की भाल
102.	गरव जी का जोहड़	तोलासमाला
103.	फूटला जोहड़	,,
104.	दड़गसवाली जोहड़ी	दुहारमाला
105.	घाटीवाला जोहड़	,,
106.	जयराम कुम्हार की मेड़बंदी (प्रथम)	काला-खोरा
107.	जयराम कुम्हार की मेड़बंदी (द्वितीय)	
108.	नंछू कुम्हार की मेड़बंदी	,,
109.	रामजी लाल गुर्जर की मेड़बंदी	,,
110.	रामकरण गुर्जर की मेड़बंदी	,,
111.	हनुमान गुर्जर की मेड़बंदी	,,
112.	कालाखोरा का जोहड़ (गूणी मूंडा वाला)	,,
113.	टोंट्याला जोहड़	दुहारमाला
114.	टांका	,,
115.	बड़ा जोहड़	,,
116.	दादावाला जोहड़	,,

क्र.सं.	बांध/जोहड़ का नाम	गांव
117.	डांगरावाला जोहड़	,,
118.	नया जोहड़	,,
119.	भूराली जोहड़ी	,,
120.	गणपत की मेड़बंदी	,,
121.	सूंडा की मेड़बंदी	,,
122.	सोहन रैगर की मेड़बंदी(प्रथम)	थानागाजी
123.	सोहन रैगर की मेड़बंदी(द्वितीय)	,,
124.	सोहन रैगर की मेड़बंदी(तृतीय)	,,
125.	श्रवण मोची (रैगर) की मेड़बंदी	भांगड़ोली
126.	भैंरू सागर	,,
127.	उदयनाथ जी की जोहड़ी	टोडी जोधावास
128.	कल्याण सहाय की मेड़बंदी	जोधावास
129.	जोधावासवाला जोहड़	,,
130.	मिश्रावास का जोहड़	,,
131.	चरखा झाड़ का बांध	,,
132.	पचबीरवाला जोहड़	हरिपुरा
133.	नानगावाला जोहड़	,,
134.	पीलीढाब वाली जोहड़ी	,,
135.	ढोलावाला जोहड़	,,
136.	फूटे बांध तले की जोहड़ी	इंदोक
137.	पचबीरवाला जोहड़	चिड़ावतों का गुवाड़ा
138.	पप्पूराम की मेड़बंदी	,,
139.	सूंडाराम का बांध	भर्तृहरि
140.	मनोहर की मेड़बंदी	,,
141.	कन्हैयालाल की मेड़बंदी	राडी मान्याला
142.	ढीमांवाली जोहड़ी	लीलूंडा
143.	कुंडवाला जोहड़	कुंड
144.	जोहड़ीमाला की जोहड़ी	क्रास्का
145.	बड़ा जोहड़	,,
146.	सूकोला का जोहड़	सुकोला
147.	कैमरीवाला जोहड़	,,
148.	नदीवाला जोहड़	डाबली
149.	बड़ा जोहड़	,,
150.	नीमड़ीवाला जोहड़	,,
151.	बड़ीवाला जोहड़	,,
152.	ग्रामसागर	कूंडरोली
153.	खातीवाली जोहड़ी	,,
154.	भागीरथ मीणा का एनीकट	,,
155.	धहकारा का जोहड़	दौलतपुरा
156.	जोधावाला जोहड़	डांगरवाड़ा
157.	पाटीवाले खेत की मेड़बंदी	,,
158.	फतेह बाबा का बांध	पूनखर
159.	गोपाल, बद्री की मेड़बंदी	कीतपुरा
160.	बड़वाली जोहड़ी	खारेड़ा
161.	डोबावाला जोहड़	,,
162.	बहणावाला जोहड़	,,
163.	बगीचीवाला जोहड़	बनियावाली
164.	महादेवजीवाला बांध(स्कूल पीछे)	मोहोब्बतपुर
165.	मूंडियावाला जोहड़	मूंडिया
166.	शहीदवाला जोहड़	मिर्जापुर
167.	स्कूलवाला जोहड़	हल्दीना
168.	रामदेवजी का जोहड़	,,
169.	पचबीरवाला जोहड़	कैरवाड़ा
170.	भोमिया जी का जोहड़	,,
171.	अयूब खां का मछलीकुंड	घाटीवास (मुबारिकपुर)
172.	लालदास जी का टांका	टोडली
173.	गोकुलदास जी का उत्तरी बांध	,,
174.	लालदास जी का बांध	,,
175.	नीमड़ीवाला जोहड़ (लालदास जी का)	,,
176.	पचबीरवाला जोहड़	टोड
177.	गोकुलदासजी का बांध	,,
178.	मंगल बांध	,,
179.	गंगागिरी महाराज का बांध	सोतका
180.	बूढ़ा झींटवाला जोहड़	करीरिया
181.	सींगराकावाला जोहड़	सींगराका

क्र.सं.	बांध/जोहड़ का नाम	गांव
182.	मंदिर के पासवाला जोहड़	जुगरावर का वास
183.	जुगरावारवाला बांध	,,
184.	रामनाथसिंह वाला जोहड़	,,
185.	खूबीराम की मेड़बंदी	,,
186.	विश्वंभर का ऊपरवाला जोहड़	खूंटेटा
187.	विश्वंभर की मेड़बंदी	,,
188.	बाबू खटीक की मेड़बंदी	,,
189.	रामलाल बैरवा की मेड़बंदी	,,
190.	हरिसिंह की मेड़बंदी	गुर्जरवास
191.	कैलाशपुरी का जोहड़	,,
192.	घानीवाला बांध	पथरोड़ा
193.	झीड़ावाली नली का बांध	,,
194.	रहमान खान की मेड़बंदी	,,
195.	चावंडवाला जोहड़	,,
196.	घाटीवाली नहर का बांध	,,
197.	घाटीवाला बांध	,,
198.	पचबीरवाला जोहड़	,,
199.	जहूर खां की मेड़बंदी	,,
200.	जुम्मा खां की मेड़बंदी	,,
201.	भुट्टा खां की मेड़बंदी	,,
202.	महूर खां की मेड़बंदी	,,
203.	नबी खां की मेड़बंदी (प्रथम)	,,
204.	नबी खां की मेड़बंदी (द्वितीय)	,,
205.	नबी खां की मेड़बंदी (तृतीय)	,,
206.	ईसब खां की मेड़बंदी	,,
207.	नाहर खोरा का जोहड़	बुर्जावाला
208.	वीरपुर का फील्डवाला बांध	द्वारकपुर
209.	वीरपुर का जोहड़	,,
210.	मामनसिंह की सेरवाली मेड़बंदी	,,
211.	चोरसीवाला जोहड़	सीकरियावास
212.	कुटीवाला जोहड़	ठुमरेला
213.	काला पापड़ा का जोहड़	खरखड़ा
214.	पूर्णसिंह की मेड़बंदी	,,
215.	देवावाली पूठ की मेड़बंदी(प्रथम)	,,
216.	देवावाली पूठ की मेड़बंदी(द्वितीय)	,,
217.	गेंदा वर्मा की मेड़बंदी	,,
218.	हरीराम हरिजन की मेड़बंदी	,,
219.	जोड़लीवाला जोहड़	,,
220.	बांसीवाले खोल का जोहड़	,,
221.	छगनसिंह की मेड़बंदी	,,
224.	बाबूसिंह की मेड़बंदी	,,
223.	रामवीर सिंह की मेड़बंदी	,,
224.	भोपांवाला जोहड़	,,
225.	शहीदवाला जोहड़	,,
226.	शहीद की घाटीवाला जोहड़	,,
227.	चूड़ सिद्धवाला जोहड़	,,
228.	अमरसिंह की मेड़बंदी	कैरवाड़ी
229.	खवानीराम की मेड़बंदी	,,
230.	पूरणमल गुर्जर की मेड़बंदी	पालमपुर
231.	भजनी गुर्जर की मेड़बंदी	,,
232.	नयी जोहड़ी	,,
233.	प्रभु चेची की मेड़बंदी	,,
234.	छज्जूसिंह की मेड़बंदी(प्रथम)	गोठड़ी पुरोहितान
235.	छज्जूसिंह की मेड़बंदी(द्वितीय)	,,
236.	छज्जूसिंह की मेड़बंदी(तृतीय)	,,
237.	गौरवाली जोहड़ी	गुरु गोठड़ी
238.	सैंयावाला जोहड़	कैरवावाल
239.	ओंडालवाला जोहड़	,,
240.	तुलसीनाथ का जोहड़	,,
241.	पठानवाला जोहड़	,,
242.	उदयराम की मेड़बंदी	,,
243.	सीताराम की मेड़बंदी	,,
244.	गिरिराजसिंह की मेड़बंदी	पीला ढाबा
245.	मदनसिंह की मेड़बंदी	चौमू
246.	शास्त्री जोहड़	,,
247.	घाटावाला नया बांध	,,

क्र.सं.	बांध/जोहड़ का नाम	गांव
248.	घाटा भीतर का जोहड़	,,
249.	खोरावाला जोहड़	वास बिलंदी
250.	खोरावाला जोहड़	नांगल टोडियार
251.	नीचला जोहड़	बड़ेर का वास
252.	उपरला जोहड़	,,
253.	पठानवाली जोहड़ी	,,
254.	बनीवाली जोहड़ी	,,
255.	शहीदवाली जोहड़ी	गुरुवास (बड़ेर)
256.	गांव आगला जोहड़	बेरला
257.	तकियावाला जोहड़	,,
258.	किसनवाला जोहड़	छीला छोह
259.	डोकवाला जोहड़	,,
260.	जाट रोणीजा का जोहड़	जाट रोणीजा
261.	बड़ा जोहड़	भड़कोल
262.	सूगरवाला जोहड़	,,
263.	मूलचंद की मेड़बंदी	,,
264.	रामखिलारी बैरवा की मेड़बंदी	,,
265.	बजरंगसिंह की मेड़बंदी	,,
266.	सार्वजनिक जोहड़	अहीर का तिबारा
267.	झेरेवाली जोहड़ी	,,
268.	सालगावाली जोहड़ी	,,
269.	भूड़ीनवाली जोहड़ी	,,
270.	मूसापुर की जोहड़ी	काली पहाड़ी
271.	प्यारेलाल का जोहड़	,,
272.	शहीद बाबा की जोहड़ी	,,
273.	पचबीरवाली जोहड़ी	,,
274.	नीमड़ीवाला नया बांध	बरखेड़ा
275.	बरखेड़ा का नया बांध	,,
276.	पोलाराम का जोहड़	,,
277.	खोलावाला बांध	सताना
278.	सती माई का जोहड़	,,
279.	धनकलावाला जोहड़	,,
280.	खोलावाला जोहड़	नवलपुरा
281.	मोरोड़वाला जोहड़	मोरोड़ कला
282.	पूर्णसिंह का एनीकट	,,
283.	वहणा कुआंवाला जोहड़	बिलेटा
284.	चिमारवाला जोहड़	,,
285.	नालावाला जोहड़	,,
286.	वालक्यावाला जोहड़	वालक्या
287.	स्कूल पीछेवाला जोहड़	पाटन
288.	वैरवावास का जोहड़	वैरवावास
289.	स्कूल के पास वाला जोहड़	विणजारी
290.	भौरंगी बाबा का जोहड़	,,
291.	लाड्या का जोहड़	,,
292.	औदीवाला जोहड़	,,
293.	रतनसिंह की मेड़बंदी	छोटा राजपुर
294.	कलाल का जोहड़	,,
295.	सांई जी का तकिया वाला जोहड़	कजोता
296.	नाथू की जोहड़ी	खोहरा
297.	गढ़वास का जोहड़	,,
298.	डल्या की ढाब	मलावली
299.	कचावा का जोहड़	कचावा
300.	भूतलावास की जोहड़ी	लाल का टोडा
301.	पंचबीर वाला जोहड़	,,
302.	काला चबूतरा का जोहड़	,,
303.	नांगल बोहरा का जोहड़	नांगल बोहरा
304.	बोहरा सागर	,,
305.	बड़ा जोहड़	पूंदरा
306.	झोटा जोहड़	,,
307.	डोरोली का जोहड़	डोरोली
308.	बद्री बांध	,,
309.	भरथरी (भर्तृहरि) वाली जोहड़ी	,,
310.	देहरा दासवाला जोहड़	,,
311.	बावड़ीवाला जोहड़	,,
312.	डूंगरीवाला जोहड़	,,
313.	जोगियों के बासवाला जोहड़	,,

क्र.सं.	बांध/जोहड़ का नाम	गांव
314.	भोलाराम का जोहड़	भजाक का बास
315.	मीड़ा चापड़ी का जोहड़	,,
316.	हरला की जोहड़ी	मानाका
317.	घाटावाली जोहड़ी	आंदवाड़ी
318.	फूटा जोहड़	,,
319.	माचैड़ी की जोहड़ी	माचैड़ी
320.	खटीकवाली जोहड़ी	,,
321.	भूरा सिद्धवाला जोहड़	,,
322.	प्रेम सागर	ईशवाना
323.	स्कूलवाली जोहड़ी	,,
324.	सुकला मीणा का एनीकट	ठेकडीन
325.	रामेश्वर का एनीकट	,,
326.	राधेश्याम का एनीकट	,,
327.	जगदीश का बांध	,,
328.	गब्दू मीणा का डकाववाला एनीकट	,,
329.	छोटेलाल का बांध	,,
330.	श्रवण मीणा का एनीकट	,,
331.	लहरी मीणा का चपलेटा बांध	,,
332.	रामसुखा का घोड़ा-ठाण का बांध	,,
333.	मंदिरवाली जोहड़ी	पाड़ा
334.	महंतवाली जोहड़ी	हिरनोटी
335.	नाईवाली जोहड़ी	,,
336.	स्कूल पीछे का जोहड़	पिनान
337.	बावड़ीवाला जोहड़	,,
338.	गोवर्धनपुरा का जोहड़	उजाड़ का बास
339.	काली पहाड़ी का जोहड़	काली पहाड़ी
340.	बावरिया बाबा का जोहड़	भूर पहाड़ी
341.	बसेड़ीवाला जोहड़	बसेड़ी
342.	गादड़ीवाला जोहड़	बाहूपाड़ा
343.	काई का जोहड़	भोज्या पाड़ा
344.	ढंडवाला जोहड़	नाहर खोरा
345.	कुटीवाला जोहड़	खेड़ा सारंगपुरी
346.	ककराला जोहड़	खेड़ा नीचला
347.	सेढ़वाला जोहड़	साहड़ी
348.	चावंडवाला जोहड़	नांगल रूपा
349.	कुरंदीवाला जोहड़	,,
350.	दल्लावाली पोखर	भनोखर
351.	गोपाल मीणा की मेड़बंदी	टोडी
352.	रड़ीवाली मेड़बंदी	अमरा का बास
353.	पालवाली मेड़बंदी	,,
354.	किसन की बड़वाली मेड़बंदी	टोडली

संयोजन : गोपालसिंह

तरुण भारत संघ के संदर्भ में

तरुण भारत संघ जंगल और जल संरक्षण के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं का एक संगठन है। राजस्थान के अलवर जिले में थानागाजी तहसील से लगभग 19 किलोमीटर दूर भीकमपुरा और किशोरी गांवों के मध्य में इसका मुख्यालय है। विभिन्न प्रजातियों के पेड़-पौधों और जानवरों से भरा- पूरा यह क्षेत्र दिल्ली से दो सौ पच्चीस किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान के पश्चिमी किनारे पर मौजूद है।

1975 में राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर में अग्निपीड़ितों की मदद के लिए गठित हुई इस संस्था ने राजस्थान की सूखी धरती को सजल करने के लिए पानी के काम को अपना लक्ष्य बनाया। अलवर, भरतपुर, दौसा, सवाई माधोपुर, धौलपुर, करौली, जयपुर और उदयपुर आदि जिलों में तरुण भारत संघ के साथ तैंतालीस पूर्णकालिक-स्वैच्छिक कार्यकर्ता एवं पांच हजार स्वयंसेवी जुड़े हुए हैं। इसका वार्षिक बजट डेढ़ करोड़ रुपये का है। तरुण भारत संघ का अनुभव है कि गांव की योजना के अनुसार जब काम किया जाता है, तो लोग स्वयं बहुत मदद करने के लिए तत्पर रहते हैं। ऐसा काम स्थायी व लोगों के लिए लाभकारी रहता है।

तरुण भारत संघ ग्रामवासियों को स्वावलम्बी बनाने की दिशा में काम करता है, खेती में स्वावलबन पानी से आता है, गोबर की खाद, देशी बीज के उपयोग से ही स्वावलम्बन संभव है, इसलिए संघ ने जहां पानी का प्रबन्ध करने में मदद की है, वहाँ गाँव को अनुशासित करके वहाँ पर गँवई दस्तूर बनवाने के प्रयास किये है, ताकि पानी का मर्यादित उपयोग हो। लोगों का सादगीपूर्ण बराबरी का व्यवहार बना रहे।

संघ ने सामलाती जीवन शैली को सहज बनाये रखने हेतु प्रयास किये है। इसलिए अब लोग मिलकर अपना काम स्वयं करने लगे हैं। संघ के कार्य-क्षेत्र में अब बहुत से गाँव ऐसे हो गये हैं, जो अपना काम स्वयं मिलकर अपने निर्णय एवं तरीके से करते हैं। ❑

अकाल के दौरान तरुण भारत संघ के कार्यकर्त्ताओं के साथ जल संरक्षण की चर्चा करते हुए ग्रामवासी

एक मानसून के बाद नया जोहड़

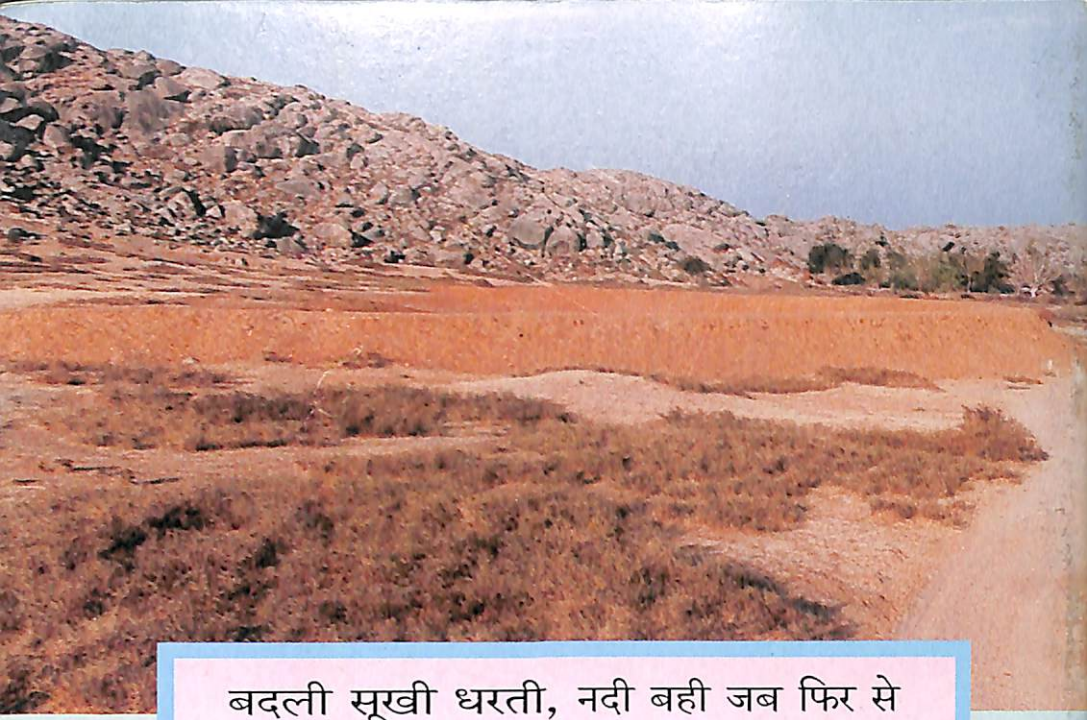

बदली सूखी धरती, नदी बही जब फिर से

तरुण भारत संघ

भीकमपुरा, थानागाजी, अलवर-301 022

मुद्रक : कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

रु. 21/-